मूल्य रु. ५-००
सलंग अंक ८२ फरवरी-२०१४

श्री स्वामिनारायण

मासिक
प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महीने की ११ तारीख

मूली वसंत पंचमी समैयो

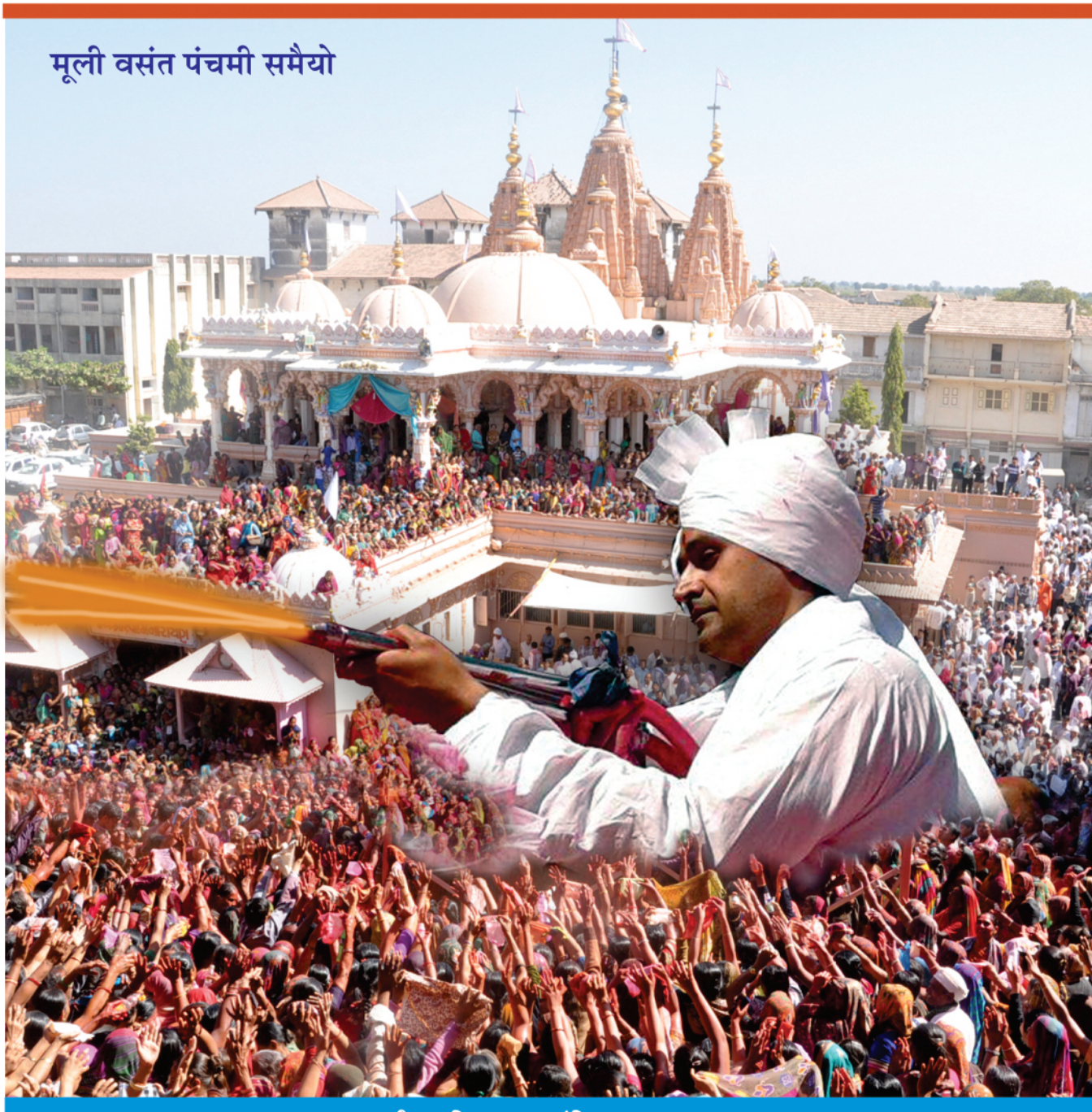

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

मूली मंदिर में वसंत पंचमी, पाटोत्सव एवं शाकोत्सव के दर्शन की तसवीर

ह्युस्टन (अमेरिका) मंदिर में उत्तरायण उत्सव

देहगाँव मंदिर में
शाकोत्सव करते प.पू. महाराजश्री

शिकागो (अमेरिका) मंदिर में उत्तरायण उत्सव

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र
वर्ष - ७ ● अंक : ८२
फरवरी-२०१४

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३.	सर्वोपरि श्याम-नरवीरनाम	०६
०४.	अहमदाबाद में ब्रह्मभोजन	०८
०५.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	०९
०६.	सत्संग बालवाटिका	११
०७.	भक्ति सुधा	१७
०८.	सच्चा सत्संगी - शिल्पी होता है	१९
०९.	सत्संग समाचार	२१

संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स :
२७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स : ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)

पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● वंशपारंपरिक देश में ५०१-०० ● विदेश १०,०००-०० ● प्रति कोपी ५-००

॥ अस्मदीयम् ॥

उत्तरायण काल पूर्ण हो गया । इस वर्ष "ठन्ढी खूब पडी । कहीं कहीं बरसात भी हुआ । भगवान जो करते हैं सभी के लिये अच्छा ही होता है । हमें ऐसी श्रद्धा होनी चाहिये । इस ऋतु में बहुत सारे उत्सव आये । इस समय शाकोत्सव का सीजन है । प्रत्येक वर्ष शाकोत्सव बढता जा रहा है । छोटे से छोटे मंदिरों में शाकोत्सव मनाया जाता है । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद् हाथों से शाकोत्सवका दर्शन सभी को अच्छा लगता है । शाकोत्सव इस समय इतना अधिक बढ गया है कि धर्मकुल सभी जगह पर पहुंच नही सकता है । परंतु ऐसे उत्सवों का हार्द एक ही है कि अंतकाल में इसका स्मरण हो आवे तो जीव परम पद को प्राप्त करले । महाराजने उत्सवों का आयोजन इसीलिये किया था । मूली मदिर में वसंतोत्सव तथा रंगोत्सव का उत्सव पूरे संप्रदाय में प्रसिद्ध है । ऐसा दर्शन वर्ष में एक ही बार होता है । फिर भी उसका स्मरण सदा बना रहता है । इसलिये भक्त ऐसे उत्सव में दर्शन करने अवश्य जांय । इसका स्मरण सदा ताजगी देता है । ऐसे उत्सवों का चाहे जैसा भी जीव हो, उसे अन्तकाल में स्मरण हो जायेगा तो निश्चित ही उसका कल्याण होगा । सन्निकट में परम कृपालु श्री नरनारायणदेव का पाटोत्सव आ रहा है, दर्शन करने अवश्य पधारियेगा ।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(जनवरी-२०१४)

१ श्री स्वामिनारायण मंदिर सरली (कच्छ) पदार्पण ।
२ श्री स्वामिनारायण मंदिर मारुसणा शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
३ हलवद गाँव में शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
४ श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट कथा प्रसंग पर पदार्पण ।
५ श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
मोटेरा श्री स्वामिनारायण मंदिर शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
६-७ श्री स्वामिनारायण मंदिर वेकरा (कच्छ) पदार्पण ।
८ श्री स्वामिनारायण मंदिर जुंडाल कथा प्रसंग पर पदार्पण ।
९ माणेकपुर गाँव में पदार्पण ।
१० श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली प्रसादी की ज्ञानवा में शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
११-१२ श्री स्वामिनारायण मंदिर मांडवी (कच्छ) शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
१४ श्री स्वामिनारायण मंदिर अमदावाद धनुर्मास धुन की पूर्णाहुति अपने वरद् हाथों से किये ।
१५ श्री स्वामिनारायण मंदिर दहेगाँव में शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
१६ श्री स्वामिनारायण मंदिर जमीयतपुरा कथा तथा शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
१७ प.भ. अशोकभाई उमेदरामभाई के यहाँ पदार्पण (इटादरावाला) शाहीबाग ।
प.भ. विजयभाई प्रभुदास मिस्त्री के यहाँ पदार्पण, घाटलोडिया ।
प.भ. महेन्द्रभाई डाह्याभाई ठक्कर के यहाँ पदार्पण, थलतेज ।
सायंकाल श्री स्वामिनारायण मंदिर महादेवनगर शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
१८ श्री स्वामिनारायण मंदिर कुहा शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
१९ श्री स्वामिनारायण मंदिर इटादरा शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
श्री स्वामिनारायण मंदिर माणसा शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
प.भ. नटुभाई रतिलाल प्रजापति के यहाँ पदार्पण, साबरमती ।
प.भ. रमेशभाई प्रहलादभाई पटेल (दूधवाला जमीयतपुरा) के यहाँ विवाह प्रसंग पर पदार्पण ।
२१. श्री स्वामिनारायण मंदिर घनश्याम नगर (ता. हलवद, मूलीदेश) पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
२२. प.भ. गोरधनभाई वालजीभाई सीतापरा के यहाँ महापूजा प्रसंग पर पदार्पण, बापुनगर ।
बालवा गाँव में प.भ. समीर चौधरी के यहाँ पदार्पण ।
(६ दिसम्बर श्री स्वामिनारायण मंदिर वडनगर शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।)

सर्वोपरि श्याम-नरवीरनाम

- साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुर धाम)

सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवानने मुमुक्षुओं के आत्यन्तिक कल्याण के लिये तीन संकल्प किया। जिस में देव-शास्त्र धर्मवंशी आचार्य। अपने हाथों से शिक्षापत्री तथा स्वमुख से वचनामृत की रचना किये। इस के साथ ही देश विभाग का लेख लिखवाकर संतो से सत्शास्त्रों की रचनाकरवाकर अपना संकल्प पूरा किये। अमदावाद में सर्व प्रथम मंदिर सद्गुरु आनंदानंद स्वामी से निर्माण करवाकर उसमें अपने ही स्वरुप श्री नरनारायणदेव की मूर्तियों को अपनी बाहों में भरकर प्रतिष्ठित किये थे। इसके बाद अन्य नव मंदिरों में मूर्ति की प्रतिष्ठा करके उपासना की प्रवृत्ति का श्री गणेश किये थे। उन मंदिरो में मेरा ही स्वरुप है। ऐसाकहकर एकेश्वरवाद के सिद्धांत का प्रचार प्रसार किया । तीसरे संकल्प में त्यागी-गृही के गुरुपद पर धर्मवंशी आचार्य पद की स्थापना किये । जिस में अमदावाद तथा वडताल की गादी पर अपने भाइयों के पुत्रों को दत्तक लेकर आचार्य पद पर आरुढ किया । अमदावाद की गादी पर श्री अयोध्याप्रसादजी को प्रतिष्ठित करके अपने गूढ तीनो संकल्पों को पूर्ण किया । तीनो संकल्प में सर्व प्रथम मंदिरो के निर्माण का कार्यारंभ करवाया । इसको देखकर कुछ लोग पूछने आये कि वैष्णव, शैव, शक्ति तथा अन्यों के बहुत सारे मंदिर है, तो क्यों अलग से मंदिर बनवारहे हैं। मंदिरों द्वारा क्या नया करना चाहते हैं। श्रीहरिने कहा कि भगवान के अवतारों के नाम में जो भेद माना जाता है, एक दूसरे के इष्टदेव का द्रोह किया जाता है, इसलिये वेदों में कहे गये एकेश्वरवाद के सिद्धांतो को अनुमोदन देते हैं।

जितने भी अवतार है वे सभी एक ही भगवान के अवतार है । अमदावाद के मंदिर में बिराजमान श्री नरनारायणदेव तथा अक्षरधाम के स्वरुप में थोडा भी भेद नहीं है । अर्थात् श्रीजी महाराज के स्वरुप में तथा श्री नरनारायणदेव के स्वरुप में स्वयं स्वामिनारायण भगवान हैं। श्री नरनारायणदेव में तथा हमारे में जो भेद करेगा, वह आगे की योनि में असुर होगा। उसकी उपासना खंडित हो जायेगी। वह भले ही बडा त्यागी हो या वैरागी हो, या ज्ञानी हो। शुद्ध उपासना की समझ यह है कि भगवान के जितने भी अवतार है वे सभी एक ही है। वचनामृत ग.म. १३ में महाराज ने कहा है कि - सर्व अवतार पुरुषोत्तम मांथी प्रगट थाय छे अने पाछा पुरुषोत्तम ने विषे लीन थाय छे। अने ते अक्षरातीत जे पुरुषोत्तम भगवान छे तेज सर्व अवतारो नुं कारण छे।'' इतना स्पष्ट वचन होते हुए भी अधम पापी लोग श्री नरनारायमदेव इत्यादि देवों को छोटा मानने लगते हैं। कुछ ऐसे कहे जाने वाले हरिभक्त स्वार्थ में जीवों के कल्याण के लिये इधर उधर भटकते है।

दूसरा शास्त्र है - जिसे वांचकर आत्म शुद्धि होती है। उपासना में कहीं कमी रह गयी हो तो, शास्त्रो के वांचने से मन स्थिर होता है और आत्मशांति मिलती है। वचनामृत उच्च न्यालायलय का जजमेन्ट है। २७३ वचनामृत है, जिसे ३१ वार श्रीहरिने कहा है। सभी अवतार के रुप में यह ही है। रामकृष्णादिक अवतार कोई दूत या दास नहीं है परंतु स्वयं भगवान स्वामिनारायण हैं। वे सभी अवतार इतने समर्थ हैं कि उन्हें जब जो रुपकी जरुरत है या ऐश्वर्य की जरुरत है तव उसे प्रगटय कर लेते हैं। अपने ऐश्वर्य को छिपाना ही भगवान पना है।

संप्रदाय में जिसे श्रीजी महाराजने भगवान जैसा कहकर उदाहरण दिये ऐसे मुक्तानंद स्वामी की रचना सर्व प्रथम रचना है। कालवाणी में आरती करते हुये कहे कि ''नारायण नर भ्राता द्विजकुल तनुधारी''ऐसा कहकर बदरिकाश्रम में तपक रते हुये ऋषि रुप भगवान श्री नरनारायणदेव दुर्वासा ऋषि से श्राप स्वीकार करके स्वयं पूर्ण पुरुषोत्तम के रुप में प्रगट हुए ऐसा समझना चाहिये। इसके साथ ही अक्षरधाम के स्वरुप में तथा श्री नरनारायणदेव के अवता रमें कोई भेद नहीं है । स.गु. रामानंद स्वामी के समय से मंदिरों में संध्या आरती के बाद रामकृष्णगोविंद की धुन ताली बजाकर की जाती है, उसके अन्त में नरनारायण नरनारायण गाया जाता है। वचनामृत अहमदाबाद के ४ में लिखा है कि - सर्वेना

स्वामी एवाजे पुरुषोत्तम नारायण ते प्रथम धर्मदेव थकी मूर्तिने विषे श्री नरनारायण रुपे प्रगट थईने बदरिकाश्रम ने विषे तप करे छे। अने बडी ते श्री नरनारायणदेव ते पृथ्वीने विषे कोईक कार्य ने अर्थे मत्स्य कच्छ-वाराह-वामन-राम-कृष्णादिक जे देह ग्रहण करे छे। नरनारायण सर्वे अवतारना कारण छे ने श्री नरनारायणने विषे जे मरण भाव कल्पे छे तेने अनेक देह धारण करवा पडे छे। ने चोराशीनां दु:खनो अने यमपुरीना दु:खनो तेने पार आवतो नथी। इसके आलांवा अमदावाद वचनामृत-६ में कहते हैं कि ''पोते नरनारायण रुपे रहीने धर्म थकी भक्ति ने विषे प्रगट थाय छे तेमाटे आ श्री नरनारायण ने अमे अमारु रुप जाणीने अति आग्रह करीने सर्वे थी प्रथम आ श्री नगर (अमदावाद) ने विषे पधराव्या छे, माटे आ श्री नरनारायणदेव ने विषे ने अमारे विषे लगारे पण भेद समजवो नहिं। अमदावाद ८ में लिखे हैं कि ''सामर्थ्य वाणी ने एम जाणे जे हुंज मोटो छुं एम जाणीने अहंकार आववा देवो नहिं। श्री नरनारायणनी करुणाये करीने हुं मोट्प पाम्यो छे।

जेतलपुर वचनामृत ५ वें में कहते हैं कि जेम के अमे तो भगवानने नरनारायण ऋषि ते छीये। अंतकाले दर्शन आपीने अक्षरधाम पमाडीए छीए। तो अक्षरधामना अधिपति पुरुषोत्तम ते जे ते प्रथम धर्म देव थकी मूर्ति नामे देवी जेने भक्ति कहिये तेने विषे श्री नरनारायण ऋषि रुपे प्रगट थईने बदरिकाश्रमने विषे तप करता हता। ने ते नरनारायण ऋषि विषे आ कलियुगने विषे पाखडी मत तेनुं खंडन करवा अधर्मनो नाश करवा धर्मना होश ने पुष्ट करवा ने धर्म ज्ञान वैराग्य तेने सहित जे भक्ति तेने पृथ्वीने विषे विस्तार सारु श्री धर्मदेव थकी भक्ति ने विषे नारायण मुनि रुपे प्रगट थईने आ सभाने विषे विराजे छे। अमे वारे-वारे श्री नरनारायणदेवनुं मुख्यपणुं लावीये छीए, तेनुं हार्द एम छे श्रीकृष्ण पुरुषोत्तम अक्षरधामना धामी जे श्री नरनारायण तेज आ सभामां नित्य विराजे छे। ते सारु मुख्यपणुं लावीये छीए, अएने ते सारुं मे अमारु रुप जाणीने लाखो रुपियानुं खर्च करीने शिखरबद्ध मंदिर अमदावादमां करावीने श्री नरनारायणनी मूर्तियु प्रथम पधरावी छे। तमे जो अमारु वचन मानशो तो अमे जे धाममांथी आव्या छीए ते धाममां तमने सर्वेने लईजाशुं। अने तमे पण जाणजो अमारुं कल्याण थई चुक्युं छे।

गढडा प्र. ४८ में - लिखें है कि नरनारायणने तो अमारे सुधो मन मेळाप छे, पंच वर्तमानमां रहीने श्री नरनारायणदेव नी पूजा करशो त्यां सुधी मूर्तिने विषे श्री नरनारायण विराजमान रहेशे एम अमारी आज्ञा छे। वडी सारंगपुर १६ वें वचनामृत में कहे हैं कि ''श्री नरनारायण ऋषि जे ते बदरिकाश्रममां रह्या थका भरतखंडना सर्व मनुष्यना कल्याणने अर्थे अने सुखने अर्थे तप करे छे बड़ी ग.प्र. ७४ में भी लिखा है कि - श्री नरनारायणदेवना दास थइने रहेवानी आज्ञा करिये छीए।'' ते नरनारायण साक्षात् भगवान छे। श्रीजी महाराजने अमदावाद तथा भुज में ही श्री नरनारायणदेव की मूर्ति को प्रतिष्ठित किया है ऐसी भावना से ही - मूली, वडताल, जूनागढ, मे भी श्री नरनारायण देव की मूर्ति को प्रतिष्ठित किया है। लेकिन कितने मंदिरों में रणछोड, त्रिकमराय कहा जाता है। अमदावदा - भुज तथा जूनागढ के मध्य मंदिर में श्री नरनारायणदेव को प्रतिष्ठित किया है। श्रीजी महाराजने स्वयं प्रतिष्ठापित किया है। जगद्गुरु शंकराचार्य (शारदापीठ) द्वारा प्रेरित उद्धव संप्रदाय के सिद्धांतो का विवाद खड़ा करके काशी में शस्त्रार्थ रखा था। उसमें जो प्रश्न पूछा गया था। उसके उत्तर में अमदावाद के सात वें वचनामृत से अपनी विजय हुई थी। इसकी चर्चा आगे के अंक में करेंगे - स्कंद पुराण विष्णुखंड के वासुदेव माहात्म्य में लिखा है कि भरतखंड में श्री नरनारायणदेव थकी अवतारो थाय छे। अपने इष्टदेव की माता-पिता तथा श्री नरनारायणदेव की माता पिता धर्म-भक्ति एक ही हैं।

श्री स्वामिनारायण मासिक में प्रसिद्ध करने के लिये लेख, समाचार एवं फोटोग्राफ्स ई-मेईल से भेजने के लिए नया एड्रेस

shreeswaminarayan9@gmail.com

अहमदाबाद में ब्रह्मभोजन

- साधु गुरुप्रसाददास (कांकरिया)

प्रसंग - विक्रम सं. १८७८ फाल्गुन शुक्ल-३ के शुभ दिन श्री नरनारायणदेव की प्रतिष्ठा हुई थी। फाल्गुन शुक्ल-५ को ब्रह्म भोज किया गया, जिस में सभी ब्राह्मणों को सवा-सवा रुपये दक्षिणा दी गयी थी।

विक्रम सं. १८७८ फाल्गुन शुक्ल-३ को श्री नरनारायणदेव की प्रतिष्ठा की गयी थी। अहमदाबाद शहर में इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवानने श्री नरनारायणदेव की बड़े धूमधाम से प्रतिष्ठा की थी। महोत्सव में सर एन्ड्री डनलप ने खूब सहयोग किया था। इसके बाद अग्रनी हरिभक्त तथा संतो की इच्छा से ब्रह्मभोज करने की वात हुई, बाद में महाराज ने आनंदानंद स्वामी से कहा कि आपकी आफिस में रुपये होंतो ब्रह्म भोज करें, स्वामीने कहा कि कोठार की आफिस में कुछ भी नहीं है, लेकिन लालदास गोरा के पास कुछ रुपये हैं। लालदास गोरा को महाराजने बुलवाकर पूछा कि आपके पास कितने रुपये हैं ? प्रभु सात हजार रुपये हैं।

वे रुपये ब्रह्म भोज के लिये देंगे ? प्रभु ! घर के लोगों से पूछना पड़ेगा। तो जल्दी जाकर पूछ आइये। लालदासभाई घर जाकर पूछे कि हमारे पास रुपये हैं। भगवान को जरुरत है। तो क्या दे दूं। घरवालोंने कहा कि जो कुछ है वह उन्हीं का है, उनको देने के लिये पूछने की क्या जरुरत ? आप लेजाकर दे आइये। लालदासभाई सात हजार रुपये लेजाकर दे आये। भगवानने ब्राह्मणों में अग्रगण्य ब्राह्मणों को बुलाकर ब्रह्मभोज की वात की। ब्राह्मणों ने कहा कि स्वामिनारायण आप कैसी वात करते है। ब्रह्म भोज करने के लिये छ महीने पूर्व से तैयारी करनी पडती है। आप मजाक तो नहीं कर रहे हैं ? नहीं, नहीं ब्रह्मदेव आप सभी हां करो, तैयारी हम करलेंगे। ब्राह्मणों के हां होने के बाद अमदावाद शहर में से गेहूं-आंटा चीनी, घी इत्यादि की खरीद हो गयी। श्रीजी महाराजके संकल्प मात्र से एक दिन में सभी खरीद हो गयी।

कांकरिया तलाब के किनारे सभी सामान का पहाण जैसे लग गया। ब्राह्मण चूल्हा बनाकर लड्डू बनाने लगे। गाँव-गाँव से बैल गाडियों के ऊपर सिद्धा सामान-घी आने लगा। ब्राह्मण एकता के साथ अपना काम कर रहे थे। घी की गाड़ियों को देख कर विचार बदल गया। किसी घी वाली गाडी को समझाबुझाकर यदि अपने घर की तरफ लेजांय तो छ महीने का काम हो जायेगा। ऐसा विचार कर एक ब्राह्मण एक गाडी को दूसे रास्ते लेकर जाने लगे। उसी समय ''निष्कुलानंद स्वामीने उस गाडीवाले से कहा कि उधर मत लेजा, रसोडा इधर है - इधर लेआ। यह सुनकर वह ब्राह्मण निष्कुलानंद स्वामी को दांतो से काट लिया।

फाल्गुन शुक्ल पंचमी को ब्राह्मणों की भोजन हेतु पंक्ति लगी। सभी मोदक खूब खाये। सायंकाल होते ही सभी सवा सवा रुपये लेकर स्वघर प्रस्थान करने लगे। ब्राह्मणों की भोजन विधिअद्भुत थी। कितने लड्डु खाये ? उस समय पूछने वाला अज्ञानी समझाजाता था। वे कितने वेद पढे ? कितने पुराण पढे ? कितने शास्त्र पढे ? यह पूछा जाता था। सामने से उत्तर भी ऐसा ही मिलता था। चार वेद पढे हैं। कोई ४ वेद एवं छशास्त्र पढे है। कोई कहता ४ वेद छ शास्त्र १८ पुराण पढे हैं। इस तरह उत्तर देते थे। इस तरह कांकरिया तालाब के किनारे ब्राह्मणों को भोजन करवाये। लाखो भक्त प्रसाद ग्रहण किये। लड्डू का पहाण लगा हुआ था। सभी को यह ख्लाय आ गया था कि मनुष्यधारी इन परमात्मा के लिये कुछ भी अशक्य नहीं है। श्रीहरि ने अपने स्वरुप की प्रतिष्ठा करके ब्राह्मणों को तथा संतो को एवं सत्संगी मात्र को भोजन कराकर संतुष्ट किया था

हनुमानजी महाराज की स्थापना

कांकरिया की पवित्र भूमि पर आज से २०० वर्ष पूर्व संप्रदाय के सर्व प्रथम धर्मकुल आदि आचार्य अयोध्या प्रसादजी महाराजने जहांपर श्रीहरि विराजते थे वहीं पर संतो के साथ बाल स्वरुप कष्टभंजन देव की प्रतिष्ठा की थी। अयोध्याप्रसादजी महाराजने हनुमानजी महाराज को विन्ती की कि आप इस स्थान पर विराजमान होकर सभी भक्तों की रक्षा करना तथा सभी के मनोरथ को पूर्ण करना। प्रताप आज भी प्रत्यक्ष दिखाई देता है। सभी भक्त दर्शन करके धन्यता का अनुभव करते हैं।

ऊपर के अनुसार प्रतिवर्ष फाल्गुन शुक्ल पंचमी के दिन ब्रह्मभोज का महोत्सव तथा भगवान का वार्षिक पाटोत्सव मनाया जाता है।

श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से

लिखावित स्वामीश्री सहजानंदजी महाराज जत पांडे अयोध्याप्रसादजी तथा पांडे रघुवीर नारायण वांचजो । बीजुं लखवा कारण एम छे जे तमो बे जणने अमो देश विभाग करीने सत्संगी वेंची आप्या छे तेमां जेना देशनो सत्संगी परहमहंसने रसोई देवा आवे ते पोतपोताना सत्संगनी रसोई पोतपोताना माणस हजु करावजो । अयोध्याप्रसादना देशना सत्संगीनी रसोई अयोध्याप्रसादजी करावे ने रघुवीरना देशना सत्संगनी रसोई रघुवीर करावे एम अमारी आज्ञा छे । बीजुं आरीत्ये गढडुं तथा वरताल तथा अमदावाद आदिक सर्व जायगानी छे संवत १८८६ ना चैत्र सुदी-४ लेखक शुकमुनिना साष्टांग प्रणाम सेवामां अंगीकार करजो ॥श्रीः॥

भगवान श्री स्वामिनारायणने स्वयं यह पत्र दोनो देश के आदि आचार्यश्री के ऊपर लिखवाया है । इस प्रसादी के पत्र को सभी के दर्शनार्थ श्री स्वामिनारायण म्युजियम के होल नं. ८ में रखा गया है । सभी हरिभक्त इस पत्र के दर्शन का लाभ अवश्य लें ।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम का तीसरा स्थापना दिन

फाल्गुन शुक्ल-३ ता. ३-३-१४ सोमवार को श्री नरनारायणदेव का वार्षिक पाटोत्सव तथा श्री स्वामिनारायण म्युजियम के स्थापना दिन के निमित्त प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से म्युजियम का तीसरा वार्षिक उत्सव मनाया जायेगा, जिस अवसर पर महापूजा, महाभिषेक, मुख्य होल मे रखा गया है । जिन्हे मुख्य यजमान बनने का लाभ लेना हो वे म्युजियम की आफिस में संपर्क करें । सहयजमान के लिये ११,००/- रुपये तथा ५,०००/- रुपये निश्चित किया गया है । जिन्हे महापूजा में बैठने की इच्छा हो वे सर्व प्रथम अपना नाम लिखवा लें । मुख्य यजमान तथा सह यजमान प्रत्यक्ष आफिस का संपर्क करे ।

मो. : ९९२५०४२६८६ (दासभाई) फोन नं. २७९-२७४८९५९७

प.पू. बड़े महाराजश्री के स्ववचनवाली कोलरट्युन मोबाईळ में डाउन लोड करने के लिये अधोनिर्दिष्ट करें ।
मोबाईल में टाईप करें : cf 270930 टाईप करें 56789
नम्बर पर : S.M.S. करने से कोलरट्युन प्रारंभ होगा । नोंट : cf टाईप करने के बाद एक स्पेस छोड़कर

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि जनवरी-२०१४

रु।. ११,१११/- अ.नि. कंकुबहन धरमदास पटेल डांगरवा (कृते मगनभाई मंगलभाई, अणदावाद)
रु।. ११,०००/- पटेल धीरजभाई करशनभाई, अमदावाद
रु।. १०,००१/- हरजीवनभाई करसनदास पटेल, अमदावाद (कृते डॉ. दिनेशभाई पटेल)
रु।. १०,०००/- कानजी लक्ष्मण राबडीया, सरली-कच्छ
रु।. १०,०००/- मीनाबहन के. जोषी (घनश्याम ईन्जीनीयरींग इन्ड. बोपल)
रु।. ६,५००/- अ.नि. कंकुबहन गोकलदास पटेल लवारपुर (कृते जनककुमार जी. पटेल)
रु।. ६,१००/- अ.नि. लक्ष्मीबहन लक्ष्मणभाई चौहाण के स्मरणार्थ (काचा टेइलर) लेस्टर-यु.के.
रु।. ५,१००/- पटेल भूपेन्द्रभाई मंगलदास सायरा (मोडासा)
रु।. ५,१००/- पटेल रितेशभाई हीराभाई सायरा (मोडासा)
रु।. ५,१००/- पटेल दीपेशकुमार विनुभाई सायरा (मोडासा)
रु।. ५,१००/- चौधरी मयूरभाई वसंतभाई सायरा (मोडासा)
रु।. ५,१००/- पटेल अमृतभाई रेवाभाई सायरा (मोडासा), रमणभाई रेवाभाई
रु।. ५,०००/- पटेल डाह्याभाई नरसीदास सायरा (मोडासा)
रु।. ५,०००/- शाह शिमोनी कौशलभाई नीतिनभाई, अमदावाद
रु।. ५,०००/- कलमेशभाई एच. शाह, अमदावाद
रु।. ५,०००/- जगदीशभाई के. दरजी, बोपल

सूचना : श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. बड़े महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति के अभिषेक की नामावलि (जनवरी-२०१४)

ता. १-१-१४ पटेल प्रविणभाई भीमदासभाई तथा विष्णुभाई भीमदासभाई राजेन तथा सौरभ के विवाह प्रसंग पर सुनीलभाई तथा जेक्शन - वडवाला।
२-१-१४ पटले राजेन्द्रभाई डी. मेमनगर।
४-१-१४ (प्रातः) चेतनकुमार रामभाई पटेल-नवा वाडज (वर्तमान-केनेडा)
१-४-१४ (सायं) अरविंद पटेल (लोस एन्जलेस)
५-१-१४ डॉ. के. के. पटेल (हिंमतनगर)
१०-१-१४ रवजी जेठा वाघजीयाणी (माधापर कच्छ) कृते खीजजीभाई (वर्तमान ओस्ट्रेलीया) श्री छोटे पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से
१२-१-१४ रजनीकांतभाई भावसार (विसनगर)
१५-१-१४ अ.नि. छोटालाल मगनलाल परिवार - कडीवाला (कृते हरिकृष्णभाई पटेल)
२१-१-१४ शिल्पाबहन सुनीलकुमार पटेल अमदावाद
२२-१-१४ वी.पी. भाई विपीनभाई दवे (सिडनी-ओस्ट्रेलिया) (कृते वी.पी. स्वामी)
२७-१-१४ भाविन नीतिनकुमार कंसारा - मस्कत।

संप्रदाय में एकमात्र व्यवस्था स्वामिनारायण म्युजियम में महापूजा। महाभिषेक लिरवाने के लिए संपर्क कीजिए।
म्युजियम मोबाईल : ९८७९५ ४९५९७, प.भ. परषोत्तमभाई (दासभाई) बापुनगर : ९९२५०४२६८६
www.swaminarayanmuseum.org/com email:swaminarayanmuseum@gmail.com

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

सत्कर्म अच्छी तरह करना चाहिये

(शास्त्री हरिप्रियदासजी, गांधीनगर)

अपने नंद संतो ने एक दृष्टांत दिया है । सौराष्ट्र में उमरदार को आता कहते हैं । ऐसे किसी आता को तीर्थयात्रा करने की इच्छा हुई । घर से वे गरीब थे । इसलिये वे अपने बेटे से कहे कि मेरी दूसरी कोई इच्छा नहीं है, लेकिन मेरी इच्छा तीर्थयात्रा करने की है । पुत्र भी भावुक था । उसके मन में हुआ कि आता की तीर्थ यात्रा करने की इच्छा है, उसे जैसे-तैसे करके पूरी करनी है । घर में किसी प्रकार की व्यवस्था नहीं थी, फिर भी गाँव के किसी व्यापारी से ५००/- रुपये उधार मांगकर ले आया । उन रुपयों को आता को दिया । पैर छूकर रोरी चावल लगाकर विदा किया । आता रुपये लेकर यात्रा करने निकल पडे । संतो ने स्पष्ट लिखा है कि चलते चलते रास्ते में धोलका आया । अमरुदकी सीजन थी । मक्खन की तरह उस गाँव में अमरुद दिखाई दे रहे थे । ऐसे अमरुदों को अमरुद के बगीचे से खरीद लिये । अमरुद बहुत अच्छए लगे । वहीं पर मिष्टान्न भी दिखाई दिया । धोलका का मिष्टान्न भी प्रसंशा का विषय है । उसे भी खरीद कर खाये, उन्हें अच्छा लगा . अब वे धोलका में रुक गये । धर्मशालावाले से कहते हैं कि आपके यहाँ जगह खाली है क्या ? हाँ । आप महीने भर भी रुक सकते हैं । हाँ, भाई महीना भर रुकना है । ऐसा कहकर वे महीने भर रुक भी गये । घर के लोग विचार करने लगे । पता नही हमारे आता कैसे हों, भगवान उन्हें अच्छी तरह रखें । अब वे आगे जांय तो ठीक, लेकिन वे तो धोलका में रुक गये । ५० कि.मी. दूर लेकिन यहाँ पर तो आता अमरुद खाते, पेडा खाते, जलेबी खाते इसके बाद इधर-इधर घूमते रहते । इस तरह धोलका में महीना पूरा होने को आया और पांचसो रुपये भी पूरे होने को आये ।

अब आता विचार करते हैं कि घर तो जाना है लेकिन घर जाकर बेटे के ऊपर रुतबा तो दिखाना ही पड़ेगा । इसलिये धोलका मलाव तालाब की मिट्टी लिये और उसी में से दो-चार शीशी में पानी भर लिये । बजार में से लाचीदाना लेलिये, बतासा लेलिये इन सभी को इकट्ठा करके संदेश भेंजे कि मथुरा, वृन्दावन, अयोध्या की निर्विघ्न यात्रा करके वापस आ रहा हूँ । भगवान की कृपा से कोई तकलीफ नहीं हुई । बेटा बहुत लायक था । उसने ढोलवाले को बुलाया, सारे गाँव वालों को बुलाया, हमारे आता तीर्थयात्रा करके आ रहे हैं । इसलिये सभी गाँव वाले एकत्र होकर ढोलबजाते हुये स्वागत के लिये आगे जाते हैं । कुछ ऐसे भावुक थे जो आता के चरणों में लोटने लगे । कुछ लोग आता के चरण धोक रपीने लगे । आता मन में विचार करते हैं कि दूर रहने में मजा है । दूर रहने का ही यह परिणाम है । सभी के साथ धीरे-धीरे घर आये । अपने थैले में से पानी की शीशी निकाल कर कहने लगे कि लो यह गंगाजल है, यह यमुनाजी का जल है, यह मथुरा का पेडा है । सभी बड़े प्रेम से लाया हूँ । यह क्रम पूरा होगया, अब उनके मिलने आने वालों की संख्या बढ गयी । सभी आकर उनसे पूछते आता आपकी यात्रा कैसी रही । आप तो यात्रा में पूर्ण स्वस्थ होकर आये । अन्य सभी यात्रा करके आते हैं तो शरीर सूख जाती है । आता ने कहा कि भगवान की कृपा से हम स्वस्थ हैं । आता तो अपने मन में विचार करते हैं कि इन्हें क्या हम कहें कि हमारी यात्रा धोलका के अमरुदों और मिठाइयों तक ही सीमित थी । उसी का यह परिणाम है कि हम इतने स्वस्थ हैं । अब जिससे ५००/- रुपये उधार मांग कर बेटा लाया था, वह मांगने लगा । उसने कहा कि आपके आता यात्रा करके आ गये, अब हमें थोडा-थोडा करके भी रुपेय दे दीजिये । लेकिन वापस करने के लिये रुपये कहाँ से लाये । घर कि स्थिति ठीक नहीं थी । छ महीने हो गये अब वह व्यापारी गरम हो गया । लेकिन व्यापारी धार्मिक था, आस्तिक था । एक दिन उसके घर आया आता बैठे हुये थे, बेटा भी बैठा था, शेठ ने कहा कि देखो भाई आप के आता यात्रा करके आ गये, रुपये लिये छ महीने से अधिक हो गये, यदि आप रुपये वापस नहीं देपायें तो आपके आता यात्रा करके आयें है उसका जो पुण्य है वह हमें दे दीजिये । यह सुनकर स्वयं आता ने कहा कि अभी ब्राह्मण को बुलाकर संकल्प के साथ शेठ को हम पुण्य देने को तैयार हैं । उसी समय ब्राह्मण को बुलाया गया हाथ में तुलसी गंगाजल लेकर संकल्प में आता ने कहा कि यात्रा का जो भी पुण्य है वह शेठजी को समर्पित करते हैं । यद्यपि बेटा बहुत मना करता हैं, यहाँ तक

खेत बन्धक रख करके भी कर्ज देने को तैयार था, फिर भी पिता ने अपना पुण्य देने का संकल्प पूरा किया । ज्यौंहि संकल्प शेठ के हाथ में आता ने समर्पित किया उसी समय से नुकसान होने लगा । शेठ खड्ढे में उतरता चला गया।

भक्तों ! भगवानने हम सभी को मानव की शरीर दिया है। वह इसलिये कि जीव का कल्याण करने के लिये । लेकिन इस संसार में भोग-विलास, मजा-मस्ती में आसक्त हुआ आदमी यह भूल जाता है और अन्त में मुक्तानंद स्वामी के शब्दों के अनुसार होता है -

''काशी केदार के द्वारका दोडे, जोगनी जुक्ति न जाणी रे,
फेराफरीने पाछे घरनो घरमां, गोधी जोडाणयो जेम धाणी रे....''

नीति-नियम से रहा जाय तो संसार के पाश से छुटा जा सकता है । अन्यथा संसार के घानी में से निकल पाना बड़ा कठिन है।

●

लींबडी की लीला

(साधु श्री रंगदास - गांधीनगर)

सवा दोसौ वर्ष पूर्व की वात है, जब गाड़ी का साधन, रेलवे का साधन, या विमान का साधन यात्रा के लिये उपलब्धनहीं था । उस परिवेष में महाराजने जहाँ जाना होता माणकी पर सवार होकर या जहाँ तहाँ पैदल भी विचरते रहते थे ।

एकवार स्वामिनारायण भगवान कारियाणी में विराजमान थे । कारियाणी में वस्ताखाचर के दरबार में रुके थे । हरिभक्तों को वचनामृत का उपदेश कर रहे थे । इतने में मेमका से कुछ हरिभक्त आये । वे लोग महाराज से निवेदन किये कि आप मेमका में पधारें । महाराज उन लोगों का आमंत्रण स्वीकार किये । स्वामिनारायण भगवान कारियाणी से मेमका पधार रहे थे उसी समय रास्ते में लींबडी के दरवाजा के पास पहुंचे ही थे कि एक आदमी रुपाभाई के पास आकर कहा कि आपके भगवान आये हैं, गाँव के दरवाजे से बाहर-बाहर जा रहे हैं । रुपा भाई दौड़ते हुए महाराज के पास गये और कहने लगे कि हे महाराज ! खड़े रहिये, ऐसा कहकर सन्निकट जाकर चरण स्पर्श किये । महाराज से पूछे कि आप गाँव के बाहर से क्यों जा रहे हैं । आप हमारे घर पधारिये । उन्हें अपने घर लेजा कर उत्तम भोजनकी व्यवस्था किये । उस गाँव में उस समय पूज्य गिनेजाने वाले एक भाई ने वहाँ के शेठ से कहा कि आपके गाँव में स्वामिनारायण आये हैं । वे भगवान के रुप में पुजाते हैं । आज उनकी प्रभुता नष्ट कर देनी हैं । इसलिये चार लोग उनके पास जाओ और साथ में लेकर आओ ।

इसके बाद शेठ के चार सेवक पटेल के घर आये । महाराज को नमस्कार करके कहे कि हमारे शेठजी आपकी याद कर रहे हैं, आपकी पूजा करना चाहते हैं । इसलिये आप उनके यहाँ पधारे । महाराज ने कहा कि हम अवश्य आयेंगे । इसके बाद महाराज अपने साथ मूलजी शेठ को तथा २-३ हरिभक्तों को लेकर शेठ केघर पर पधारे । वह शेठ महाराज को बैठने के लिये आसन दिया । जिस पर महाराज विराजमान हुये । बाद में वहाँ पर पूज्यने महाराज से पूछा कि आप भगवान कैसे कहे जाते हो । आपको सामान्य होने की जरुरत थी, ब्रह्मचारी, सन्यासी, तपस्वी न होकर भगवान हो गये । श्रीजी महाराजने कहा कि - यदि हम योगी या सन्यासी अथवा ब्रह्मचारी हों तो सामने कोई अवश्य आयेगा । बाद में हमने विचार किया कि इन सभी में भगवान तो बहुत उदार होते हैं । ठाकुरजी कुछ बोलेंगे नही, ऐसा समझकर हम भगवान हो गये । यह सुनकर वह पूज्य ने कहा कि यह आप भगवान के वेश को धारण किये हैं । महाराज ने कहा कि क्या करने से भगवान हो सकते हैं । वह बोला कि, भगवान अन्तर्यामी होते हैं । यदि आप भगवान हों तो हम सभी के संकल्प को बता दीजिये ।

यह सुनकर महाराजने कहा कि आपके संकल्प को मैं क्या हमारे भक्त भी आपके संकल्प को वता सकते हैं । आप अपने संकल्प को हमारे भक्तों के सामने रखिये । प्रत्येक के संकल्प को हमारे भक्त कहेंगे । यहाँ के पूज्य ने एक भाई का नाम लिया, बाद में महाराज की आज्ञा से एक हरिभक्तने अपनी दृष्टि बन्द की और समाधिष्ठ होकर उन पांचो के हृदय में क्या बात चल रही है । जानकर सभी के मन की वात स्पष्ट कह दिये । पूज्य का यह संकल्प है, अन्य तीनो का संकल्प है । एक के मन में हो रहा है कि यहाँ से उठ के चला जाऊ । सभी को सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ । अब वह पूज्य कहने लगा, हे महाराज ! आप सत्य रुप में पुरुषोत्तम है । आप के साथ हमें कोई विवाद नहीं करना है । बाद में महाराज खड़े हुये और चलने लगे ।

परमात्मा स्वामिनारायण भगवान सर्वान्तर्यामी हैं । उस पूज्य के मन में विश्वास हो गया । हमें भी यह समझ होनी चाहिये । परमात्मा सभी का कर्ता, हर्ता हैं । इनकी इच्छा के सिवाय कुछ भी नहीं होता इसी लिये कहा गया है कि -

तन की जाने मन की जाने जाने चित्तकी चोरी ।
उनके आगे कहाँ छिपाऊँ जिनके हाथ में जग की डोरी ॥

વિશ્વનું સૌ પ્રથમ શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર-કાલુપુરમાં બિરાજતા શ્રી નરનારાયણદેવના
જીર્ણોદ્ધારિત મંદિર તથા સુવર્ણ સિંહાસનના ઉદ્‌ઘાટન પ્રસંગે

શ્રી નરનારાયણદેવ મહોત્સવ

તા. ૨૪ થી ૨૮ ડિસેમ્બર-૨૦૧૪

અધ્યક્ષશ્રી : પ.પૂ. ધ. ધુ. આચાર્ય ૧૦૦૮ શ્રી કોશલેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજ

આયોજક

મહંત સ્વામી સ.ગુ. શા. સ્વામી શ્રી હરિકૃષ્ણદાસજી તથા સ્કીમ કમિટી
તથા શ્રી નરનારાયણદેવ મહોત્સવ સમિતિ
શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર - કાલુપુર - અમદાવાદ-૧
ફોન. ૦૭૯-૨૨૧૩૨૧૭૦, ૨૨૧૩૬૮૧૮

શ્રી નરનારાયણદેવ મહોત્સવ

તા. ૨૪-૧૨-૨૦૧૪ થી તા. ૨૮-૧૨-૨૦૧૪

સર્વાવતારી ભગવાન શ્રી સ્વામિનારાયણ અનંત જીવોનું કલ્યાણ કરવા અનંતમુક્તોને સાથે લઈ મનુષ્યદેવ ધારણ કરી પૃથ્વીલોક પર પધાર્યા. ૪૯ વર્ષ સુધી પોતાની અપાર દયા અને દિવ્ય ઐશ્વર્ય વડે અનંતજીવોને અક્ષરધામના સુખભોગી બનાવ્યા અને એ પરંપરા અવિરત ચાલ્યા કરે એ માટે દેવ, આચાર્ય, સંત અને સત્‌શાસ્ત્રની કલ્યાણકારી પરંપરા પ્રવર્તાવી. શ્રીહરિએ કરેલા અનેક અલૌકિક કાર્યો પૈકીનું શિરમોર કાર્ય એટલે મંદિરોનું નિર્માણ. ભગવાન શ્રી સ્વામિનારાયણની આજ્ઞાથી આજથી લગભગ ૧૯૨ વર્ષ પહેલા સ.ગુ. આનંદાનંદ સ્વામીએ ગુજરાતના મુખ્ય નગર અમદાવાદમાં વિશ્વનું સૌ પ્રથમ શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિરનું નિર્માણ કર્યું અને સર્વોપરી શ્રીહરિએ સ્વહસ્તે બાથમાં લઈને સ્વસ્વરૂપ શ્રી નરનારાયદેવ પધરાવ્યા. શ્રી નરનારાયણદેવના ઉંબરા પર ઊભા રહીને "આ નરનારાયણ દેવનું સ્વરૂપ અને અમારા સ્વરૂપમાં લેશમાત્ર ફેર નથી." "જે એમ જાણે જે આ નરનારાયણદેવ અને ભગવાન સ્વામિનારાયણ જુદા છે તેણે અમને ઓળખ્યા જ નથી." "આ નરનારાયદેવની મૂર્તિ સત્સંગી માત્ર એ પૂજામાં રાખવી." આવા મહિમા વચનો સ્વમુખે કહ્યાં એવા મહાપ્રતાપી શ્રી નરનારાયણદેવનું મંદિર સમયના ઘસારે ઘસાતા જીર્ણોદ્ધારની જરૂરિયાત ઉભી થઈ. જે તે સમયે પ.પૂ. મોટા મહારાજશ્રીની આજ્ઞાથી તે સમયના મહંત સ.ગુ. પી.પી. સ્વામીએ કાર્યનો આરંભ કર્યો. ત્યારબાદ પૂ. નિર્ગુણ સ્વામી તથા પૂ.નારાયણસ્વરૂપ સ્વામીએ કાર્યને આગળ ધપાવ્યું. પ.પૂ. ધ.ધુ. આચાર્ય મહારાજશ્રીની આજ્ઞાથી વર્તમાન મહંત સ.ગુ. શાસ્ત્રી સ્વામી હરિકૃષ્ણદાસજી તથા અમદાવાદ શ્રી નરનારાયણદેવ સ્કીમ કમિટિએ આ જીર્ણોદ્ધારના કાર્યને પુરજોશમાં વેગ આપ્યો જે હવે પૂર્ણતાને આરે છે. સાથો સાથ દેવોના સુવર્ણ સિંહાસન પર જીર્ણ થતા તે સ્થાને નૂતન સુવર્ણ સિંહાસન બનાવવાનો નિર્ધાર કર્યો જે પણ પૂર્ણ થશે. જીર્ણોદ્ધારિત મંદિર તથા નૂતન સિંહાસનના ઉદ્‌ઘાટનના પાવન પ્રસંગે પ.પૂ. ધ.ધુ. આચાર્ય મહારાજશ્રીની અધ્યક્ષતામાં સૌ સંતો ભક્તોના સાથ સહકારથી ભવ્યાતિભવ્ય "શ્રી નરનારાયદેવ મહોત્સવ" તા. ૨૪-૧૨-૨૦૧૪ થી તા. ૨૮-૧૨-૨૦૧૪ પર્યંત ધામધૂમથી ઉજવવાનું નિર્ધારેલ છે. તો આવો આપણે સૌ સાથે મળી આપણું તન, મન અને ધન શ્રી નરનારાયણદેવના ચરણોમાં સમર્પિત કરી આ ઉત્સવને ઉમંગથી ઉજવીએ.

મહોત્સવ દરમિયાનના આયોજનો

- શ્રીમદ્ સત્સંગીભૂષણ અંતર્ગત શ્રી નરનારાયણદેવ માહાત્મ્ય કથા
- એક દિવસીય શ્રી હરિયાગ (યજ્ઞ)
- 3 દિવસ સમૂહ મહાપૂજા
- મહાઅભિષેક, છપ્પન ભોગ અન્નકૂટ
- શ્રી નરનારાયણદેવની નગર યાત્રા
- પ્રદર્શન
- શ્રી સ્વામિનારાયણ મહામંત્ર અખંડ ધુન
- બ્લડ ડોનેશન કેમ્પ
- સર્વ રોગ નિદાન કેમ્પ
- ૧૧૦૦૦ દિવાઓ વડે કાલુપુર મંદિરની સમુહ આરતી
- શ્રી નરનારાયણદેવ બાલમંડળ તથા બાલિકામંડળ દ્વારા સાંસ્કૃતિક કાર્યક્રમ

મહોત્સવના ઉપલક્ષમાં ધાર્મિક આયોજનો

- ૨૫૧ ગામડે સત્સંગ સભાઓ
- ૧૫૧ મીનીટની ૨૫૧ ગામડે અખંડધૂન
- ૫૧ કરોડ "શ્રી સ્વામિનારાયણ" મહામંત્ર લેખન
- જનમંગલ - ૧,૨૫,૦૦,૦૦૦, વચનામૃત - ૫૧૦૦, ભક્તચિંતામણી - ૫૧૦૦ પાઠ
- પદયાત્રા દ્વારા કાલુપુર શ્રી નરનારાયણદેવ દર્શન
- ૧૧૦૦૦ શ્રી સ્વામિનારાયણ મેગેઝીન સભ્યપદ ઝુંબેશ

મહોત્સવના ઉપલક્ષમાં સામાજીક આયોજનો

- ૧,૨૫,૦૦૦ વૃક્ષારોપણ
- ૨૧૦૦ બોટલ બ્લડ ડોનેશન તથા સર્વરોગ નિદાન કેમ્પ
- ૧૧૦૦૦ શૈક્ષણિક સાધનોનું વિતરણ
  (ગામડાઓના બાળમંડળના વિદ્યાર્થીઓને)
- વ્યસન મુક્તિ અભિયાન
- ૧૫૧ અપંગોને ટ્રાઈસિકલ વિતરણ

આપનો સહયોગ

આ મહોત્સવના ઉપલક્ષમાં આપ આપના પરિવારજનો, મિત્રો સાથે મળી માળા, દંડવત્, પ્રદક્ષિણા, જનમંગલ-વચનામૃત-ભક્તચિંતામણીના પાઠ, મહામંત્રલેખન, પદયાત્રા જેવા નિયમો લઈ અથવા લેવડાવી વિશેષ ભજન કરશો. (જે માટે નોટબુક તથા ફોર્મ આપણા શ્રી સ્વામિનારાયણ મેગેઝીન અથવા તો કાલુપુર મંદિરની ઓફિસમાંથી મળશે.)

આર્થિક રીતે યોગદાન આપી સહભાગી થવા ઇચ્છતા ભક્તો મહોત્સવ દરમિયાન આયોજીત સમુહ મહાપુજા-હરિયાગ તથા અન્ય યજમાન પદનો લાભ લઈ શકશે.

૧૧,૦૦૦/- ૨૧,૦૦૦/-	તા. ૨૫-૧૨-૨૦૧૪ના રોજ સમૂહ મહાપૂજાનો લાભ મળશે. (પ.પૂ. લાલજીમહારાજશ્રીના સાનિધ્યમાં)
૩૧,૦૦૦/- ૫૧,૦૦૦/-	તા. ૨૬-૧૨-૨૦૧૪ના રોજ પ.પૂ. આચાર્ય મહારાજશ્રીના નિવાસસ્થાને નિત્ય ધર્મકુળ દ્વારા પૂજાતા પ્રસાદીના હરિકૃષ્ણ મહારાજની મહાપૂજા(પ.પૂ.મોટા મહારાજશ્રીના સાનિધ્યમાં)
૧,૦૦૦૦૦/- કે તેથી વધુ	તા. ૨૭-૧૨-૨૦૧૪ સર્વાવતારી ભગવાન શ્રીહરિની પૂજામાં રહેલાં અને પૂજ્ય આચાર્ય મહારાજશ્રી જેની દરરોજ પૂજા કરે છે એવા પ્રસાદીના શાલિગ્રામ ભગવાનની મહાપૂજા (પ.પૂ.આચાર્ય મહારાજશ્રીના સાનિધ્યમાં)
૨,૦૦૦૦૦/- કે તેથી વધુ	તા. ૨૭-૧૨-૨૦૧૪ એકદિવસીય શ્રીહરિયાગ (યજ્ઞ)ના પાટલે બેસવાનો લાભ.

આથી વિશેષ સેવા કરીને વિશિષ્ટ યજમાન પદનો લાભ લેવા ઇચ્છતા ભક્તજનોએ કાલુપુર મહંત સ્વામી અથવા આગેવાન સંતોનો સંપર્ક કરવો.

भक्तिसुधा

प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से
"कल्याण का सबसे उत्तम साधन है "सत्संग""
(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

पृथ्वी को पृथ्वी क्यों कहा जाता है ? पहले के समय में धरती पर मनुष्य कंदमूल इत्यादि खाकर जैसे-तैसे जी लेता था, कोई व्यवस्था नहीं थी । पृथुराजा हो गये, उन्हों पृथ्वी को समतल बनाया और अनुकूल व्यवस्था की जिससे पृथ्वी नाम पड़ा । हमें इस पृथ्वी पर उत्तम व्यवस्था के साथ जन्म मिला है वह भी इस सत्संग में । भगवान की यह कृपा कही जायेगी कि वे अत्यन्त कृपा करके मनुष्यजन्म के साथ सत्संग भी दिये हैं । सभी के जीवन में ऐसा नहीं होता । माँ-बाप को जिन बालकों पर विश्वास होता है, उन्हें ही सम्पूर्ण सम्पत्ति देते हैं । इसी तरह परमात्मा भी जिसके ऊपर विश्वास रखते हैं, उसे ही सत्संग रुपी खजाना देते हैं । इस सत्संग के भीतर चिंतन-मनन करके अपने मोक्ष के साधन को खोजना है ।इसके साथ ही मन से भगवान को समर्पित होना है । क्योंकि ? कल्याण का एकमात्र साधन सत्संग है । मूल मजबूत होगा, भजन-कीर्तन करते होंगे, आज्ञा के अनुसार जीवन का कार्य करते होंगे तो अवश्य कल्याण होगा । फल अवश्य मिलेगा । धर्म के विना जीवन अघोरी की तरह है । धर्म ईश्वर की साक्षात् अनुभूति है । इस पृथ्वी पर अनासक्त होकर रहना चाहिये, सुख-दुःख तो अपने हाथ में है । परंतु हम दूसरों पर आरोप लगाते हैं । कभी अपवाद भी लग जाता है । जब कि खरराब काम किये रहते नहीं है, सहन शक्ति, क्षमा करने की भावना होनी चाहिये । इसी तरह सत्संग में भी देखने को मिलता है । क्षमावान् होने से उत्कर्ष बढता है । यदि सुखी होना हो तो अधिक सहन करने की शक्ति रखनी चाहिये । हमें दुःख किसका होता है ? जब अपने अनुकूल कार्य नहीं होता है या मान-सन्मान-प्रतिष्ठा इत्यादि में कही ठेंस पहुंचती है तो दुःख लगता है । आज का किया गया सत्कर्म आने वाले कल में सदभाग्य के रुप में परिवर्तित होगा, इसी तरह आजका किया गया दुष्कर्म आने वाले कल में दुर्भाग्य के रुप में परिवर्तित होगा । परमात्मा कार्य करने में अवरोधरुप नहीं है । सब कुछ साक्षीभाव से देखते हैं और उसी अनुरुप फल भी देते हैं । जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति इन तीनों अवस्था में परमात्मा साक्षीरुप में रहते हैं । जाग्रत अवस्था में जो कुछ करते हैं वह सब याद रहता है । स्वप्न अवस्था में थोड़ा बहुत याद रहता है । सुषुप्ति अवस्था में कुछ भी याद नहीं रहता फिर भी इतना अवश्य याद रहता है कि हमें कुछ भी स्वप्न नहीं आया । सुषुप्ति अवस्था यह घोर अज्ञान अवस्था है । एक व्यक्ति को एक पुत्री होती है, वह बहुत कुरुप होती है । जिसके परिणाम स्वरुप उसका विवाह नहीं होता । पुत्री के पिता को इसका टेनशन रहता है । अन्त में एक लड़का उसके साथ विवाह करने को तैयार होजाता है । परंतु वह अन्धहोता है । इसलिये कि उसे यह खबर न पड़े कि हमारी पत्नी कैसी है । जिससे वे दोनो बड़ी प्रसन्नता के साथ रहते है । एक दिन उस गाँव में एक हकीम आते हैं, उनके पास ऐसा आंजन था कि जिसे लगाने से आंख की रोशनी आजाय ! यह वात जानकर गाँव के लोग पुत्री के पिता से वात करते हैं कि आप दामाद को हकीम के पास ले जाइये. पुत्री के पिता कहते हैं कि मैं उन्हें कुछ दिन के बाद उत्तर दूंगा । वे विचार करते हैं कि दामाद की आंख ठीक हो जायेगी तो मेरी बेटी को छोड़ सकता है । धीरे-धीरे यह वात उनके दामाद के कान में पडती है । दामाद हकीमके पास गया । उसकी आंख अच्छी हो गयी । अब वह अच्छा हो गया और उस लडकी को छोड़ दिया । इसका तात्पर्य यह है कि प्रत्येक व्यक्ति अज्ञान, मोह के जंजाल में फंसा हुआ है । जो अंधा पुरुष है वह अज्ञान है । कुरुप कन्या विषय-वासना है । पिता मोह है । हकीम सत्संग है । अंजन-ज्ञान प्रकाश है । मनुष्य को अंधकार के अज्ञान में विषय-वासना तथा मोह हकीमरुपी सत्संग तक पहुंचने नहीं देती । दामाद को जिस तरह अंजनरुपी प्रकाश मिलता है और कुरुप कन्या उसे छोड़ देती है । इसी तरह मनुष्य को ज्ञानरुपी प्रकाश मिलते ही कुरुप रुपी विषयवासना छोड़ देती है । अर्थात् वह व्यक्ति शाश्वत सुख को प्राप्त कर लेता है । जगत का नाशवंत पदार्थ अपने आप छूटने लगता है । जो ज्ञान मनुष्य को सत्संगसे मिलता है पिर उसे वह कभी नहीं छोड़ता । इसी में त्याग समाया हुआ है । महाराज ने दया करके यह सत्संग हम सभी को दिया है । हमारी यह फर्ज है कि और आगे बढते रहने के लिये प्रयत्न करते रहें । रावण कितना ज्ञानी था । तीन लोक का राजा था । ब्राह्मण था । शिवजी का भक्त था । कितना महान था । परंतु उसे यह खबर थी कि मेरी यह शरीर तामसी है । इसी

लिये असने कहा कि ''भजन न होय यह तामस देहा''। रावण को मुक्ति की भी चाहना थी। इसलिये उसने उपाय किया कि ''भगवान राम के साथ वैर करलेते हैं। वैसा ही किया। यद्यपि उसे यह पता था कि भगवान राम को मैं हरा नहीं सकता लेकिन उनके साथ युद्ध करने में मेरी मृत्यु होगी तो मैं मौक्ष को प्राप्त कर लूंगा। हम सभी के ऊपर तो परमात्मा की पूर्ण कृपा है, रावण जैसी युक्ति लगाने की भी जरुरत नहीं। मात्र प्रेम, श्रद्धा के साथ भगवान की भक्ति करने की जरुरत है। मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा कब होती है ? मंदिर पूर्णरुप से बनकर तैया होजाने पर प्रतिष्ठा होती है। इसी तरह अपने शरीर रुपी मंदिर में भगवान को प्रतिष्ठित करना हो तो अन्त:करण को आचरण द्वारा शुद्ध रखना होगा। तभी अंत:करण में भगवान को बैठा सकेंगे। भक्त होने से पूर्व मनुष्य बनना होगा। बाद में भक्त बनने की जरुरत है।

●

संस्कार सिंचन

– सां.यो. कोकिलाबा (सुरेन्द्रनगर)

गले में पहनने के लिये अच्छा चयन बनवाये हो, लेकिन नकशी न हो तो ? अच्छी तिजोरी बनवाये हों लेकिन उसमें ताला न हो तो ? छाता अच्छा हो लेकिन उसमें कमान न हो तो ? अच्छा घडा हो थोडा काला हो तो ? इसी तरह हम अच्छा कपडा पहने हों, रोज स्नान करते हों, तेल फुलेल लगाये हों, अभूषम पहने हों लेकिन संस्कार न हो तो ? यह सब देखावा मात्र रहेगा। श्रृंगार तो संस्कार को कहते हैं।

किस तरह किसके साथ बोलना चाहिये, किस तरह उत्तर देना चाहिये, कैसे वर्तन करना चाहिये, यह सब संस्कार में समाहित है। कोई अपने घर आवे उसे हम सत्कार के साथ दो शब्द न बोले, साधुवाद न करें, जय स्वामिनारायण या अन्य कोई अभिवादन के शिष्टाचार के शब्द न बोले, मुख प्रसन्न न रखें तो संस्कार हीनता की वात कही जायेगी। घर चाहे जितना सुशोभित किया गया हो लेकिन मीठी वाणी बोलने वाला न हो तो उसके घर में आने का मन नहीं होगा। कितने लोगों के घरो में रुपये, फर्नीचर, अद्यतन साधन होते हुए भी – एकतान नहीं होती है। जिस घर में बाप-बेटा झगड़ा करते हों तो मां-बेटा झगड़ते हों, या भाई-भाई आपस में झगडते हों किसी को भी अच्छा नहीं लगता। जो सुनता है उसे खराब लगता है तो घर का वातावरण कैसा होगा। जब बेटा मां के सामने या बाप के सामने जैसा तैसा बोलता हो या जैसा तैसा वर्तन करता हो तो, उसे हम क्या कहेंगे ? यही कहेंगे कि लड़का संस्कार हीन है। संस्कार जीवन में सबसे बड़ा मूल तत्व है। रुपये कम होंगे तो चलेगा। झूपड़ी में भी रहेंगे तो चलेगा लेकिन संस्कार नहीं होगा तो नहीं चलेगा। इसका कारण यह है कि हर जगह पर संस्कार की जहुरत पड़ेगी। प्रात: उठते ही रुपयों की जरुरत नहीं होती। संस्कार की जरुरत होती है। जब प्रात: मम्मी-पप्पा उठाते हैं तब बच्चे कहते हैं सोने दोन ! बस प्रात: से ही माथाकूट चालू हो जाती है। मा-बाप कुछ शिक्षादेते है, समझाते हैं उसका पालन न करना भी संस्कार हीनता है। उनके सामने कटु वचन, कटोर आवाज, ऊँची आवाज, न कहने योग्य वचन बोलना ही संस्कार हीनता है। संस्कार कोई बजार में बिकता नहीं है, किसी कोलेज, स्कूल में पढ़ाया नहीं जाता। वह मंदिर में या संतों के पास मिल सकता है। बालक जब छोटा रहता है तभी से संस्कार देते रहना चाहिये। माता पिता का जीवन भी सदाचरण वाला होना आवश्यक है। मात्र वात करने से बालकों में संस्कार नहीं आते। जैसा माता-पिता का जीवन होता है वैसा अनुकुरण बालक करते हैं। बालक में जैसा संस्कार सिंचन करेंगे वैसा वह आगे चलकर होगा। ध्रुवजीको उनकी माताने गर्भावस्था में ही सभी संस्कारों से सिंचित किया था। बाल्यावस्था में भी अच्छी टेव अच्छे विचार, अच्छी बातें, अच्छे संस्कार दी थी। जिस कारण बाल्यावस्था में ही परमात्मा को प्राप्त कर लिये थे। बालक को संस्कारी बनाने का पूर्ण उत्तर दायित्व मां का होता है।

आज तो प्रत्येक घरों में टी.वी. है। जिस में ८०% प्रतिशत खराब दृश्य ही आते हैं, अच्छे तो २०% प्रतिशत आते हैं, टी.वी. देखने से समय मातायें यह नहीं जानती कि मैं देख रही हूँ लेकिन मेरे साथ मेरा बेटा भी देख रहा है, जिस में कोई संस्कार की बात नहीं है उसे देखना या दिखाना आनेवाले कल के लिये बहुत घातक सिद्ध होगा। उसमें ऐसे-ऐसे दृश्य आते हैं जो विकार उत्पन्न करने वाले होते है, अर्धनग्न वस्त्रादि में स्त्रियों का सीन होता है, खराब-खराब शब्द सुनने को मिलता है किसी प्रकार की मर्यादा नहीं हती, उसी को देखकर बालक अनुकरण कनते हैं। पश्चिम देश की कुसंस्कारी संस्कृति प्रत्येक घरों में प्रवेश कर गयी है। इस तरह टी.वी. सभी को अध: पतन के मार्ग पर ले जा रही है। शास्त्र में ऐसा वर्णन मिलता है कि मनुष्य जैसा देखता है, सुनता है, वैसा अन्तकरण पर असर पडती है। बाद में वैसी करने की इच्चा

होती है। परिणाम स्वरुप टी.पी. देखने से मनुष्य की बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है, व्यसनी शराबी, जुआरी, सभी होने लगते हैं। अनीति के कार्य, कुसंस्कार के कारण करने से अधटित घटनाये समाचार पत्रो में, टी.वी. में देखने को मिलती है।

इसलोक तथा परलोक में सुखी होना हो तो माता-पिता जबान-बुढ्ढा-बालक सभी विकारी दृष्य टी.वी. में न देखें। तभी अपने भीतर संस्कार का सिंचन होना संभव है। कोई टी.वी. देखकर प्रहलाद, जनक, अंबरीष, नरसिंह महेता इत्यादि हो गये हों ऐसा कहीं देखा-सुना नहीं गया। करीब २०-३० वर्ष से टी.वी. चेनल धार्मिक संस्कारो से अलग दिखाते है। भारतीय संस्कार के अनुसार स्त्रियां कभी अंगप्रदर्शन या खुले बाजार में अर्धनग्न स्थिति में दिखाई नहीं पड़ती थी। परंतु यह टी.वी. जब से आयी तब से शरम आवे ऐसे दृश्य देखने को मिलता है।

भारतीय संस्कृति में स्त्री परित्याग की कही वात नहीं मिलती। कोई पुरुष अपनी पत्नी का त्याग नहीं कर सकता था। कोई स्त्री भी अपने पति का त्याग नहीं करती थी। परंतु यह टी.वी. पति-पत्नी में झगड़ा कराकर कोर्ट के माध्यम से अलग करवा देती है। टी.वी. कुसंस्कारी बनाने का योग्य माध्यम बनगया है। अपने पुरखे अपनी कन्या को दहेज में संस्कार देते थे। आज कल तो टी.पी. सेट, सोफासेट, टी-सेट, किचन सेट, इत्यादि सम्पत्ति के रुप में विवाह में दिया जाने लगा है, इस में संस्कार की कहां वात आई। उन सभी वस्तुओं का ससुराल में अन्य व्यक्ति कोई उपयोग में लेता है तो वह लड़की तुरंत कहती है कि मैं अपने मायके से लाई हूँ। इसका कोई अन्य उपयोग नहीं कर सकता। यहीं से झगड़ा प्रारंभ हो जाता है।

सभी बक्तों को यह बताना है कि संस्कार के माध्यम से इस लोक तथा परलोक दोनो सुखमय होगा। इसके लिये आवस्यक यह है कि अपने बालको को जैसे भी हो, उत्तम चिंतन करके उन्हें अच्छे संस्कार दे। उन्हें कार नहीं देंगे तो चलेगा परंतु संस्कार तो अवश्य दीजियेगा।

सच्चा सत्संगी - शिल्पी होना है

- महादेव धोरियाणी (राजकोट)

अमदाबाद कोलेज में अभ्यास करने वाला एक विद्यार्थी अपने गाँव के मंदिरका निर्माण कार्य देखने गया। वहाँ पर मूर्ति कलाकार (शिल्पी) बड़ी एकाग्रता से संगमरमर श्वेत पत्थर में से घनश्याम महाराज की मूर्ति बनार हा था। वह विद्यार्थी उस शिल्पी के पास बड़ी शांति से बैठ गया। उसी समय एकाएक उसका ध्यान बगल में पड़ी हुई मूर्ति पर पड़ी, उसने शिल्पी से पूछा ''मंदिर में एक सरखी दो मूर्तियों की प्रतिष्ठा करने की क्या जरुरत ?'' घनश्याम महाराज की मूर्ति तो अच्छी लगती है।

मूर्ति तो एक ही लगेगी, लेकिन दूसरी मूर्ति में थोडा नुक्सान हो गया है, इसलिये उसे अलग रख दिया है। वह विद्यार्थी उस मूर्ति के पास जाकर बड़े ध्यान से देखा तो उसके मन में हुआ कि यह शिल्पी शिल्प शास्त्र का उत्तम जानकार है, इसने इस मूर्ति को बनाई है अब उस मूर्ति में उसे कहीं नुक्सान दिखाई नहीं दिया। अरे यह मूर्ति तो बड़ी दिव्य तथा आखंडित है, आपको इसमें कहाँ नुकशान दिखाई देता है।

''एकाग्रता भंग होने से मूर्ति में नासिका के पास एक छोटा सा घसारा हो गया।'' शिल्पीने कहा। विद्यार्थीने पुनः सूक्ष्म निरीक्षण किया, तो उसे ना सिका के पास थोड़ा सा घिसा दिखाई दिया। अरे महोदय ! इस मूर्ति की स्थापना किसी शिखरी मंदिर में होने वाली है। जिस सिंहासन पर यह मूर्ति प्रतिष्ठित होगी वहाँ से करीब १० फुट की दूरी से लोग दर्शन करेंगे। इतनी सूक्ष्मता से नासिका के ऊपर घिसा दिखाई नहीं देगा।

वह चुस्त सत्संगी कलाकार अपना काम छोड़कर विद्यार्थी के सामने देखा और हंसते हुए कहा कि,

''भाई ! दूसरा कोई यह वात जाने या न जाने इसकी हमें खबर नहीं, परंतु मैं और मेरा घनश्याम महाराज तो ना सिका के ऊपर अधिक घिसा गया है इसे जानते तो हैं न ?''

इतना कहकर वह शिल्पी बड़ी एकाग्रता से अपना काम पुनः प्रारंभ कर दिया। वह विद्यार्थी उस शिल्पी को ध्यान पूर्वक देखता रह गया।

''अरे ! तुंज छीनी तुज शिल्पी, अने पत्थरपण तुं।
घडी ले आकार जीवन नो, जेवो तु चाहे तेवो तुं॥

શ્રી સ્વામિનારાયણ

વિશ્વનું સૌ પ્રથમ શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર-કાલુપુરમાં બિરાજતા શ્રી નરનારાયણદેવનું જીર્ણોદ્ધારિત મહા મંદિર તથા સુવર્ણ સિંહાસનના ઉદ્‌ઘાટન પ્રસંગે

અધ્યક્ષશ્રી : પ.પૂ.ધ.ધુ. આચાર્ય ૧૦૦૮ શ્રી કોશલેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રી

મહોત્સવના ઉપલક્ષમાં ધાર્મિક આયોજનો

- ૨૫૧ ગામડે સત્સંગ સભા
- ૧૫૧ મિનિટની ૨૫૧ ગામડે અખંડ ધૂન
- ૫૧ કરોડ "શ્રી સ્વામિનારાયણ" મહામંત્ર લેખન
- જનમંગલ - ૧,૨૫,૦૦,૦૦૦ વચનામૃત - ૫૧૦૦ ભક્તચિંતામણી - ૫૧૦૦ પાઠ
- પદયાત્રા દ્વારા કાલુપુર મંદિર શ્રીનરનારાયણદેવ દર્શન
- ૧૧૦૦૦ શ્રી સ્વામિનારાયણ મેગેઝીન સભ્યપદ ઝુંબેશ

મહોત્સવના ઉપલક્ષમાં સામાજીક આયોજનો

- ૧,૨૫,૦૦૦ વૃક્ષારોપણ
- ૨૧૦૦ બોટલ બ્લડ ડોનેશન તથા સર્વરોગ નિદાન કેમ્પ
- ૧૧૦૦૦ શૈક્ષણિક સાધનોનું વિતરણ (ગામડાઓના બાલમંડળના વિદ્યાર્થીઓને)
- વ્યસન મુક્તિ અભિયાન
- ૧૫૧ અપંગોને ટ્રાઈસિકલ વિતરણ

(૧) શ્રી સ્વામિનારાયણ મહામંત્ર લેખન ..... (૨) જનમંગલના પાઠ .....

(૩) વચનામૃત પાઠ..... (૪) ભક્તચિંતામણી પાઠ.....

(૫) શિક્ષાપત્રી પાઠ..... (૬) પ્રદક્ષિણા .....

(૭) માળા ..... (૮) દંડવત.....

હું મહોત્સવના ઉપલક્ષમાં ઉપરોક્ત મુજબ ભક્તિ કરવાનો સંકલ્પ કરી શ્રી નરનારાયણદેવને રાજી કરવાનો નિર્ણય કરું છું. નામ : _____ ઉંમર : _____

સરનામું : _____

ગામ : _____ મોબાઈલ નં. : _____

● શ્રી સ્વામિનારાયણ મહામંત્ર લેખનની નોટબુક કાલુપુર મંદિર અથવા આપના વિસ્તારના મંદિરમાંથી પ્રાપ્ત થશે. ૧ મંત્રપોથીમાં ૧૧૦૦૦ મંત્ર લખી શકાશે. જે કોઈ ભક્તજન આવી ૫૦ મંત્રપોથી (૫,૫૧,૦૦૦) મંત્ર લખશે તેમને ઉત્સવ દરમ્યાન મહાપૂજાના યજમાનપદે લ્હાવો મળશે. પરંતુ તે માટે ૫૦ મંત્રપોથી એક સાથે જ જમા કરાવવાની રહેશે. જ્યારે નોટબુકો જમા કરાવશો ત્યારે આપને એક યજમાનપદનું કાર્ડ આપવામાં આવશે. અલગ-અલગ મંત્રપોથી જમા કરાવનારને યજમાનપદનો લાભ મળશે નહી. મંત્રપોથી જમા કરાવવાની છેલ્લી તા. ૨૪-૧૧-૨૦૧૪ રહેશે.

ઉપરોક્ત ફોર્મ ભરી ઓફિસમાં રૂબરૂ જમા કરાવવું અથવા "શ્રી નરનારાયણદેવ મહોત્સવ કાર્યાલય"
શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, કાલુપુર, અમદાવાદ-૩૮૦૦૦૧ ના સરનામે મોકલી આપવું.

सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर भाटेरा मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से एवं तपोमूर्ति संत स.गु. भंडारी स्वामी जानकी वल्लभदासजी की प्रेरणा से तथा स.गु. स्वा. धर्मस्वरुपदासजी (नाथद्वारा) के मार्गदर्शन में निर्मित नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर भाटेरा की मूर्ति प्रतिष्ठा ता. ८-१२-१३ से १२-१२-१३ तक बड़ी भव्यता से सम्पन्न हुई । इस महोत्सव के अन्तर्गत श्रीमद् भागवत पंचान्ह पारायण, हरियाग, ठाकुरजी की नगर यात्रा इत्यादि कार्यक्रम बड़े आनंद के साथ मनाये गये थे । कथा के वक्ता पद पर स.गु. शा.स्वामी श्रीजीप्रकाशदासजी (हाथीजण गुरुकुळ) बिराजमान थे ।

ता. १०-१२-१३ को प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी पधारकर हार्दिक आशीर्वाद दिये थे । ता. ११-१२-१३ को ठाकुरजी की भव्य शोभायात्रा निकाली गयी थी । ता. १२-१२-१३ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे उन्हीं के वरद हाथों से मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा की गयी थी । बाद में हरियाग की पूर्णाहुति की गयी थी । प्रासंगिक सभा में विद्वान संतो की प्रेरकवाणी तथा पू. भंडारी स्वामी एवं पू. धर्म स्वरुप स्वामी को सम्मान के साथ पुष्पहार पहनाये थे ।

(वासुदेव स्वामी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर इलोल २१ वाँ पाटोत्सव सम्पन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से यहाँ के महंत जगदीश स्वामी तथा आनंद स्वामी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर इलोल के २१ वें पाटोत्सव के अन्तर्गत श्रीमद् भागवत पंचान्ह पारायण स.गु. शा. स्वामी नारायणवल्लभदासजी (वडनगर) के वक्तापद पर संपन्न हुआ था । इस अवसर पर त्रिदिनात्मक हरियाग का भी आयोजन किया गया था । ता. २३-१२-१३ के प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे, उनके स्वागत में शोभायात्रा निकाली गयी थी । मंदिर में ठाकुरजी की अन्नकूट आरती करके हरियाग की पूर्णाहुति करके सभा में विराजमान हुए थे । सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिये थे । समग्र प्रसंग में एस.एस. स्वामी, कुंज स्वामी, श्रीजी स्वामी, शा. विश्ववल्लभदासजी, तथा श्रीजीस्वरुप स्वामीने सेवाका कार्य भार सम्हाला था । सभा संचालन प्रेमप्रकाश स्वामीने किया था । कोठारीजीने आभार विधिकी थी ।

(शा. प्रेमप्रकाशदास)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मणियोर (इडर देश) में ८ वाँ पाटोत्सव सम्पन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा यहाँ के महंत स्वामी जगदीशप्रसाददासजी की प्रेरणा से मणीयोर मंदिर का ८ वाँ पाटोत्सव मनाया गया । जिस में प.पू. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से ठाकुरजी का महाभिषेक अन्नकूट की आरती इत्यादि कार्यक्रम किये गये थे । समस्त सभा को हार्दिक आशीर्वाद देकर प्रसन्नता व्यक्त किये थे । प.भ. भीखाभाई मोगाभाई पटेल परिवारने पाटोत्सव के यजमान पद का लाभ लिया था । समग्र प्रसंग में सत्य संकल्प स्वामी, कुंज विहारी स्वामी, श्रीजी स्वामी, विश्ववल्लभ स्वामी की सेवा सराहनीय थी ।

(शा. प्रेमप्रकाशदास, इडर)

भुंडिया गाँव में पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स्वामी हरिप्रकाशसदासजी (उनावा पूर्व महंत) की प्रेरणा से ता. १२-१-१४ भव्य शाकोत्सव मनाया गया था । शा. भक्तिकेशवदासजीने कथा का लाभ दिया था । समग्र गाँव शाकोत्सव का लाभ लेकर धन्यता का अनुभव किया । (कोठारीश्री)

श्री स्वामिनारायण मंदिर नाराणपुरामां भव्य शाकोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत शा.स्वा. हरिॐप्रकाशदासजी एवं शा. स्वा. माधवप्रकाशदासजी की प्रेरणा से नारायणपुरा मंदिर में २२-१२-१३ रविवार को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा बहनों की गुरु अ.सौ. प.पू. गादीवालाजी की उपस्थिति में तथा संत हरिभक्तों की उपस्थिति में भव्य शाकोत्सव मनाया गया था ।

सायंकाल कीर्तनकार पूरव पटेल के कीर्तन भक्ति से सभा का प्रारंभ हुआ था । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आगमन पर सभी के आनंदकी सीमा न रही । सर्व प्रथम सभा में प.भ. दिलीपभाई शंभुभाई (मुख्य यजमान) प.भ. डॉ. हर्षदभाई झिंझुवाडिया (धर्मकुल पूजन) तथा प.भ. जयंतीभाई चलोडावाला परिवार (संतपूजन) द्वारा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, बहेनो द्वारा प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी का पूजन तथा संतो के पूजन के बाद पू. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी (कालूपुर) तथा पू. पी.पी. स्वामी (जेतलपुर) ने अपनी प्रेरकवाणी द्वारा हरिभक्तों को आनंद से ओतप्रोत कर दिया था ।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से भव्य शाकोत्सव के बाद प.पू. महाराजश्री ने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था । सभी यजमान तथा मेहमान एवं सुवर्ण सिंहासन के यजमान प.भ. घनश्यामभाई (कुवा) प.भ. नटवरभाई पटेल (करजीसणवाला) परिवार आदि को प.पू. महाराजश्रीने सन्मान

करके आशीर्वाद दिया था । सायंकाल ७-०० बजे ठाकुरजी की दिव्य समूह आरती की गयी थी । शाकोत्सव में महिलाओंने सम्पूर्ण सेवा का उत्तरदायित्व लिया था । श्री नरनारायणदेव युवक-युवती मंडल की सेवा प्रेरणारुप थी । श्री घनश्यामभाई (डेकोरेशन) सेवा तथा श्री नीतिभाई (धरमपुर) की सेवा भी प्रसंशनीय थी । भोजनालय की सेवा में जेतलपुर के महंत के.पी. स्वामी, मुकुन्द स्वामी, आत्म स्वामी (सायला), मुक्तस्वरुप स्वामी (मुली), के.पी. स्वामी (रतनपर) तथा देव स्वामीने सेवा की थी । सभा संचालन प्रेमस्वरुप स्वामीने किया था ।

(धवल भगत नारणपुरा मंदिर)

इडर देश के गाँवो में शाकोत्सव संपन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत स्वामी जगदीशप्रसादजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर इडर में विराजमान महाप्रतापी देवश्री गोपीनाथजी हरिकृष्ण महाराज के देशवाले पुरावास, अरोडा, इलोल, साचोदर, रतनपुरा, कुकडीया, नेत्रामली इत्यादि गाँवो में इडर मंदिर के संत मंडल शाकोत्सव के साथ भगवान की कथा का भी लाभ दिये थे ।

(साधु प्रेमप्रकाशदास ईडर)

(सोला-चांदलोडिया विस्तार) श्री स्वामिनारायण मंदिर में प्रथम पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से ५-१-१४ को यहाँ की युनिकसीटी होम्स के विशाल मैंदान में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों शाकोत्सव सम्पन्न हुआ । इस प्रसंग में संतो में अमदावाद मंदिर के पू. महंत स्वामी, पू. देव स्वामी, शा. हरिॐ स्वामी, शा. चैतन्य स्वामी तथा शा. राम स्वामी ने अमृतवाणी का लाभ दिया था ।

अंत में प.पू. आचार्य महाराजश्रीने सभी को श्री नरनारायणदेव महाप्रभु का आश्रय रखने की आज्ञा के साथ हार्दिक आशीर्वाद दिया था ।

प्रसंग में मुख्य यजमान श्री कनुभाई बी. पटेल तथा सहयजमान सतीषभाई थे ।

(श्री स्वामिनारायण मंदिर सोला-चांदलोडिया)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालियाणा में शाकोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा पू. महंत स्वामी आत्मप्रकाशदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर कालीयाणा में ता. १२-१-१४ को समस्त गाँव के हरिभक्तों द्वारा भव्य शाकोत्सव, धनुर्मास में धुन तथा गाँव में प्रभात फेरी एवं ठाकुरजी को भिन्न-भिन्न भोजन का भोग लगाया जाता था । उत्तरायण को श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा झोली मांगने का कार्यक्रम किया गया था । जिस में अनाज, घी, तेल, गुण, चीनी, मसाला नगद रुपये इत्यादि श्री नरनारायणदेव के कोठार में जमाकर के रसीद प्राप्त किये थे ।

(श्री नरनारायणदेव युवक मंडल कालीयाणा

वहेलाल मंदिर में शाकोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा साधु चैतन्यस्वरुपदासजी की प्रेरणा से वहेलाल मंदिर में ता. ५-१-१४ को सुंदर शाकोत्सव मनाया गया था । श्रीजीप्रकाश स्वामी तथा श्रीजी स्वरुप स्वामीने कथा का लाभ दिया था । अगल बगल के गाँवो से २५०० जितने भक्त शाकोत्सव का लाभ लिये थे ।

(गोरधनभाई सीतापरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कलोल (गंजीवास) प्रथम शाकोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स.गु. स्वामी हरिचरणदासजी (कलोल) की शुभ प्रेरणा से यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. १०-१-१४ से प.पू. बड़े महाराजश्री के शुभ सानिध्य में तथा उन्ही के वरद् हाथों भव्य शाकोत्सव मनाया गया था । इस प्रसंग पर स.गु. महंत शा.स्वामी हरिकृष्णदासजी, पू. हरिचरण स्वामी, शा. छोटे पी.पी. स्वामी, शा. चैतन्य स्वामी, शा. स्वा. विश्वस्वरुपदाजी, राम स्वामी (इसंड) इत्यादि स्थानों से संत पधारे थे । समस्त सभा को प.पू. बड़े महाराजश्री ने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था । मुखीवास पाटीदार समाज की सेवा सभी के लिये प्रेरणारुप थी ।

(स्वा. दिव्यप्रकाशदास)

श्री स्वामिनारायण मंदिर चांदखेडा में शाकोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर चांदखेडा (गाँव) में ता. १२-१-१४ रविवार साम को भव्य शाकोत्सव मनाया गया ।

इस प्रसंग पर स.गु. महंत शा. पी.पी. स्वामी (नारणघाट) तथा शा. चैतन्य स्वामी आदि संतोने कथावार्ता करके ठाकुरजी के समक्ष शाकोत्सव मनाया था । (कोठारीश्री)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मांडल में भव्य शाकोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर मांडल में ता. ४-१-१४ को भव्य शाकोत्सव प्रसंग पर जेतलपुर से पू. शा.पी.पी. स्वामी (बडे), शा. भक्ति स्वामी महेसाणा से महंत शा. उत्तम स्वामी, स्वामी नारायणप्रसाददासजी आदि संतो की शुभ उपस्थिति में महाराजश्री की मूर्ति के सन्मुख अलौकिक शब्द का बघार किया गया । समग्र प्रसंग में मिस्त्री नरेशभाई पटेल जीतुभाई तथा मुकेशभाई कोठारी की सेवा प्रेरणारुप थी । आसपास के स्वामी तथा सांख्ययोगी बहनो ने भी इस प्रसंग में भाग लिया ।

(कोठारीश्री मांडल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर वडनगर

ऐतिहासिक तथा धार्मिक नगरी वडनगर श्री

स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ आशीर्वाद से धनुर्मास में ता. १६-१२-१३ से ता. १४-१-१४ तक प्रातः ५-३० से ६-३० प्रभातफेरी तथा ६-३० से ७-०० तक श्री स्वामिनारायण महामंत्र धून का आयोजन किया गया । जिस में महंत शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजीने प्रभात फेरी में भाग लेकर हरिभक्तों को प्रोत्साहित किया । कोठारी शा.स्वा. विश्वप्रकाशदासजी तथा पू. शा.स्वा. अभिषेकप्रसाददासजीने श्री घनश्याम महाराज का सुंदर श्रृंगार करके हरिभक्तों को अलौकिक दर्शन करवाये थे । श्री नरनारायणदेव युवक मंडलने भी समग्र महीने में प्रभातफेरी-धून का लाभ लिया । रोज सुबह ८-३० से ९-३० तक महंत स्वामीने वचनामृत की कथा द्वारा हरिभक्तों को भक्तिरस में मग्न कर दिया। (नविनचंद्र मोदी)

जमीयतपुरा श्री प्रभु हनुमानजी मंदिर में कथा मारुति यज्ञ-शाकोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स.गु. स्वामी जगतप्रकाशदासजी की प्रेरणा से आदि आचार्य प.पू. श्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री द्वारा प्रतिष्ठित प्रभा हनुमानजी मंदिर जमीयतपुरा में पाटोत्सव प्रसंग के उपलक्ष में ता. १२-१-१४ से ता. १३-१-१४ तक कथा, पाटोत्सव, मारुति यज्ञ तथा शाकोत्सव मनाया गया । कथा में पू. शा.पी.पी. स्वामी (जेतलपुर), पू. शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजी (वनडगर), पू. शा.स्वा. पूर्णप्रकाशदासजी (धोलका), पू. शा.स्वा. हरिॐप्रकाशदासजी (नारणपुरा), पू. शा.स्वा. श्रीजीप्रकाशदाजी (हाथीजण), शा.स्वा. हरिजीवनदासजी (हिंमतनगर), शा. घनश्याम स्वामी (जमीयतपुरा) तथा शा.स्वा. भक्तिवल्लभदासजी (सहिंतापाठ) के वक्ताद पर सम्पन्न हुई । ता. १६-१-१४ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे । उनके वरद् हाथों से पाटोत्सव, आरती, कथा की पूर्णाहुति, मारुति यज्ञ की पूर्णाहुति, धर्मशाला का उद्घाटन तथा शाकोत्सव विधिपूर्वक मनाया गया । इस प्रसंग में अनेक भाविक भक्तोंने यजमान बनकर सेवा का लाभ लिया । इस प्रसंग में शा. विश्वल्लभ स्वामी (गढपुर) प्रेम स्वामी, विष्णु स्वामी, जे.पी. स्वामी, चंद्रप्रकाश स्वामी, आदि संतोने भाग लिया । सभा संचालन पा. भरत भगत (मूली) तथा प.भ. घनश्यामभाई पटेल (उवारसदवाले)ने किया था। (महंत विजय स्वामी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के शुभ आशीर्वाद से तथा यहाँ के महंत स्वामी गुरुप्रसादासजी तथा महंत स्वामी आनंदप्रसाददासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया में धनुर्मास में संत-हरिभक्तों द्वारा श्री स्वामिनारायण महामंत्र धून की गयी । पवित्र एकादशी को कांकरिया से कालुपुर मंदिर श्री नरनारायणदेव तथा धर्मकुल के दर्शन करके संत-हरिभक्तोने मंगलमय महामंत्र धून तथा पदयात्रा का आयोजन किया गया था । प.पू. बड़ी गादीवालाश्री भी बहनों को आशीर्वाद देने धून में पधारी थीं । उत्तरायण के शुभ दिन धून की पूर्णाहुति के बाद महंत स्वामी, शा. यज्ञप्रकाशदासजी, आनंद स्वामी तथा शा. स्वा. विश्वप्रकाशदासजीने अमृतवाणी का लाभ दिया । उसके बाद सभी को प्रसाद दिया गया।

(हितेन श्री न.ना.देव युवक मंडळ, कांकरिया)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कुहा शाकोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा महंत स्वामी गुरुप्रसाददासजी तथा महंत स्वामी आनंदप्रसाददासजी की प्रेरणा से तथा प.भ. भद्रेशभाई चंदुभाई पटेल के यजमान पद पर ता. १८-१-१४ को भव्य शाकोत्सव प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वदह हाथों से मनाया गया । संत-हरिभक्तों द्वारा प.पू. महाराजश्री के स्वागतार्थ सुंदर शोभायात्रा का आयोजन किया गया । शोभायात्रा पूर्ण होने के बाद प.पू. महाराजश्री ने मंदिर में बिराजमान ठाकुरजी की आरती करके महापूजा की पूर्णाहुति की । प्रासंगिक सभा में संतोने सर्वोपरि भगवान का माहात्म्य कहा । यजमान परिवार ने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का पूजन अर्जन करके आशीर्वाद लिया । समस्त सभा को प.पू. महाराजश्री ने आशीर्वाद दिया । युवक मंडलने सुंदर सेवा की । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से शाकोत्सव का दर्शन कर प्रसाद ग्रहण कर भक्तोंने धन्यता का अनुभव कीया।

(पिनल पटेल श्री नरनारायणदेव युवक मंडल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर माणसा शाकोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा स.गु. स्वामी जगतप्रकाशदासजी तथा स.गु.शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी (जेतलपुर) की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर माणसा में ता. १९-१-१४ को भव्य शाकोत्सव का आयोजन किया गया । ता. १९-१-१४ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का आगमन होते ही प्रथम मंदिर में ठाकुरजी की आरती उतारकर जहाँ शाकोत्सव का आयोजन किया गया था वहाँ श्री ४१ गाँव कडवा पाटीदार समाज वाडी विजापुर रोड पर पधारे थे । जहाँ पर शाकोत्सव का दिव्य बघार किया गया । जिस में पू. स्वामी जगतप्रकासदासजी, शा. घनश्याम स्वामी, महंत के.पी. स्वामी, विष्णु स्वामी, शा. यज्ञप्रकाशदासजी, शा. हरिप्रकाशदासजी तथा भरत भगत उपस्थित रहे । अंत में सभा को प.पू. आचार्य महाराजश्री ने दिव्य आशीर्वाद दिये । हजारों भक्तोंने प्रसाद लेकर धन्यता का अनुभव किया । श्री नरनारायणदेव युवक मंडल की सेवा प्रेरणारुप थी ।

(चंद्रप्रकाश स्वामी, यासिन पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर दहेगांव में शाकोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स.गु. महंत शा. स्वा. हरिकृष्णदासजी, महंत स्वा. देवप्रकाशदासजी एवं महंत छोटे पी.पी. स्वामी (नारायणखाट) तथा राजेश्वरानंदजी को. जे.के. स्वामी, नीलकंठ स्वामी की प्रेरणा से दहेगाँव (टेबला फली) श्री स्वामिनारायण मंदिर के समस्त हरिभक्तों की तरफ से ता. १५-५-१४ को सायंकाल ५-३० बजे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से भव्य शाकोत्सव संपन्न किया गया था । जब प.पू. आचार्य महाराजश्री पधारे उस समय धूमधाम के साथ स्वागत किया गया था । इसके बाद मंदिर में ठाकुरजी की आरती उतारकर सभा में विराजमान हुए थे । प्रासंगिक सभा में महंत शा. स्वा. हरिकृष्णदासजी, शा.पी.पी. स्वामी, इत्यादि संतोने प्रसंगोचित प्रवचन किया था । अन्त में समस्त सभा को प.पू. आचार्य महाराजश्रीने हार्दिक आशीर्वाद दिया था । हजारों हरिभक्त दर्शन करके प्रसाद ग्रहण करके धन्यता का अनुभव किये थे ।

(को. हर्षदभाई)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मोडासा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के मंदिर में पवित्र धनिर्मास के अवसर पर महामंत्र धुन तथा प.भ. नारायणभाई पटेल तथा रजनीकांत पटेलने सर्वोपरि श्रीहरि की कथा की थी । मथुरा के महंत शा.स्वा. अखिलेश्वरदासजी तथा स्वा. सर्वेश्वरदासजीने वचनामृत की कथा करके सभी को सुंदर लाभ दिया था । हरिभक्तों ने धनुर्मास में यहाँ होस्पिटल के रोगियों को तथा श्री रिद्धि-सिद्धि विनायक मंदिर, हनुमानजी मंदिर में भी प्रसाद का वितरण किया था । (के.बी. प्रजापति मोडासा)

करजीसण में सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री नरनारायणदेव महोत्सव के उपक्रम में श्री स्वामिनारायण मंदिर करजीसण में शा. माधवप्रियदासजी (सिद्धपुर) शा. विश्वप्रकाशदासजी तथा श्री वल्लभ स्वामी इत्यादि संतोने कथा करके हरिभक्तों को प्रसन्न किया था । कलोल, वडु, डांगरवा, भाउपुरा, वेडा, आनंदपुरा, तथा टांकिया के हरिभक्तोंने सभा का लाभ लिया था । सभा के यजमान प.भ. प्रहलादभाई पटेल थे ।

(पार्षद जसु भगत)

श्री स्वामिनारायण मंदिर माधवगढ (प्रांतिज देश)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से ता. १२-१-१४ को अ.नि. पुरुषोत्तमदास मोतीदास पटेल परिवार द्वारा आयोजित होमात्मक महापूजा प्रसंग में प.पू. लालजी महाराजश्री पधारे थे । हरिभक्तों द्वारा भव्य स्वागत किया गया था । प.पू. लालजी महाराजश्रीने ठाकुरजी की आरती उतारकर सभा में पधारे थे । सभा में छोटे पी.पी. स्वामी (महंतश्री नारणघाट), ब्र. पू. राजेश्वरानंदजी, शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी, शा.स्वा. छपैयाप्रसाददासजी, शा. दिव्यप्रकाशदासजीने प्रासंगिक प्रवचन किया था । अन्त में प.पू. लालजी महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था । (विष्णुभाई पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर साबरमती (रामनगर) शाकोत्सव

श्री स्वामिनारायण मंदिर साबरमती (रामनगर) में हरिभक्तों द्वारा ता. ५-१-१४ को सायंकाल भव्य शाकोत्सव किया गया था । जिस में कोटेश्वर गुरुकुल के संत शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी इत्यादि संतोने शाकोत्सव का वर्णन किया था । कोटेश्वर गुरुकुल के बालकोने कीर्तन धुन कीथी । समग्र प्रसंग का आयोजन स.गु. शा.स्वा. पी.पी. (नारायणनघाट महंतश्री) द्वारा किया गया था । हजारो भक्तोंने शाकोत्सव का लाभ लिया था। (राजूभाई - कोटेश्वर गुरुकुल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर गोमतीपुर

अमदावाद के गोमतीपुर के श्री नरनारायणदेव देश के श्री स्वामिनारायण मंदिर में हरिभक्तों ने धनुर्मास में प्रात: ठाकुरजी के समक्ष श्री स्वामिनारायण महामंत्र धुन प्रवचन, इत्यादि किया गया था । संत भी यदाकदा कथा का लाभ देते रहते हैं । यहाँ पर धनुर्मास को धूमधाम से मनाया गया था । (मुकेशभाई)

श्री स्वामिनारायण मंदिर एप्रोच (बापूनगर) धनुर्मास धुन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर एप्रोच में स्वामी लक्ष्मणजीवनदासजी की प्रेरणा से धनुर्मासमें प्रात: मंगला आरती के बाद ४५ मिनिट तक श्री स्वामिनारायण महामंत्र धुन तथा कोठारी स्वामी हरिकृष्णदासजी के वक्तापद पर संगीत के साथ स.गु. निष्कुलानंद स्वामी कृत भक्ति निधिकी कथा की गई थी । हरिभक्त बड़ी संख्या में भाग लिये थे । उत्तरायण के अवसर पर स्वयं सेवको के साथ मंदिर के साथ संत भी जुड़े थे । (गोरधनभाई सीतापरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर समौ में धनुर्मास धुन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर समौ में समस्त हरिभक्तों द्वारा धनुर्मास में ठाकुरजी के समक्ष महामंत्र धुन, थाल, आरती की गयी थी । ता. १४-१-१४ को १२ धंटे की अखंड महामंत्र धुन की गयी थी । इसके बाद ठाकुरजी के भोग का प्रसाद सभी को दिया गया था । यहाँ के छबीला हनुमानजी महाराज (११०० वर्ष पुराना) का पाटोत्सव ता. २४-१-१४ को धूमधाम से मनाया गया था ।

(श्री नरनारायणदेव युवक मंडल)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

मूली के महाप्रसादीभूत ज्ञान वाव के पास भव्य शाकोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा समग्र

धर्मकुल की प्रसन्नता से मूली में जहाँ श्रीहरिने भरवाड का रुप धारण किया था । और स.गु. ब्रह्मानंद स्वामी को पत्थर की खान बताया था, उसी अलौकिक दिव्य स्थलपर कई वर्षों से सुरेन्द्रनगर मंदिर द्वारा शाकोत्सव मनायं गया है।

ता. १०-१-१४ को महंत स्वामी श्यामसुंदरदासजी की प्रेरणा से यहाँ प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के सानिध्य में भव्य शाकोत्सव मनाया गया था । प.पू. महाराजश्रीने शाक का वघार करके महाराज के समकालीन तद्रुप का दर्शन करवाया था । बावली के ऊपर प्रसादीभूत श्री हनुमानजी महाराज का अभिषेक पूजन-आरती इत्यादि किया गया था । मूली-सुरेन्द्रनगर के महंत स्वामी की प्रेरणा से मूली देश के अनेक हरिभक्त सेवा का लाभ लिये थे । इस प्रसंग पर अनेकों स्थानों से संत सांख्ययोगी बहने तथा मूली देश के हजारों हरिभक्त पधारे थे । समग्र आयोजन कोठारी स्वामी कृष्णवल्लभदासजीने किया था । सभा संचालन शैलेन्द्रसिंह झालाने किया था।

संतो में शा. प्रेमवल्लभदासजी, मुकुन्द स्वामी, हरिकृष्ण स्वामी, शांति स्वामी, पा. भरत भगत, पा. कनु भगत, तथा प्रवीण भगतने सेवा की थी। (शैलेन्द्रसिंह झाला)

श्री स्वामिनारायण मंदिर वधासिया गाँव में शाकोत्सव

वांकानेर तहसील के वघासीया श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा मूली के महंत स्वामी श्यामसुंदरदासजी तथा स.गु. स्वामी लक्ष्मीप्रसाददासजी की प्रेरणा से गांव के सभी हरिभक्त सुंदर शाकोत्सव का आयोजन किये थे । इस प्रसंग पर मूली मंदिर से स्वा. श्यामसुंदरदासजी स्वा. लक्ष्मीप्रसाददासजी, स्वा. जयप्रकाशदासजी, निखीलदेव स्वामी पधारकर महाराजकी सर्वोपरिता की वात की थी।

(झाला शैलेन्द्रसिंह भुरुभा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर स्वारवरेची में धनुर्मास धुन

खाखरेची श्री स्वामिनारायम मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से पूरे धनुर्मास में हरिभक्तों ने प्रात: श्री स्वामिनारायण महामंत्र धुन की थी । मूली मंदिर के भक्ति स्वामीने २८-१२-१३ को कथा का लाभ दिया था। (केशवजी भगत)

विदेश सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर शिकागो में धनुर्मास धुन तथा श्रीहरिगीता पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा यहाँ के महंत स्वामी जयप्रकासदासजी तथा विश्वविहारीदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर शिकागो में श्री घनश्याम महाराज, श्री नरनारायणदेव, श्री राधाकृष्णदेव तथा श्री लक्ष्मीनारायणदेव के सानिध्य में ता. १६-१२-१३ से १४-१२-१४ तक धनुर्मास धुन तथा श्रीमद् सत्संगिजीवन अन्तर्गत श्रीहरि गीता पारायण स.गु. शा.स्वा. विश्वविहारीदासजी के वक्ता पद पर हुई थी । जिसके यजमान दिलीपभाई तथा पदमाबहन (३० दिन) गोहेल थे । निरंतर ३० दिन तक प्रसाद (बालबोग) की सेवा हरिभक्तों की तरफ से हुई थी।

धनुर्मासमें प्रात: ५-३० बजे मंदिर में हरिभक्त आते थे । धुन में तथा कथा में बडी संख्या में हरिभक्त आते थे । १०० वर्ष में इतनी ठन्ढी कभी नहीं पडी थी । फिर भी इतनी कडाके की ठन्ढी में हरिभक्त लाभ लेना भूलते नहीं थे। प्रतिदिन २० मिनट तक अवकाश के दिन ४५ मिनट तक कथा होती ती । हरिभक्त धनुर्मासमें अधिक लाभ लें इस हेतु से यहाँ के महंत जे.पी. स्वामी गुरु हरिकृष्णदासजी (अमदावाद) तथा शा. विश्वविहारीदासजी प्रात: ३ बजे उठकर भगवान की सेवा में लगजाते थे । उत्तरायण की सभा ११-१-१४ को रखी गयी थी । एकादशी का दिन होने से बहुत सारे हरिभक्त पधारे थे। दोनों संतोने महाराज को खूब दिव्यता के साथ सजाया था । ता. १२-१-१४ को ठाकुरजी के समक्ष अन्नकूट लगाया गया था । प्रत्येक हरिभक्त अपने धरों से नाना विध व्यंजन बनाकर लाये थे । सभा में दोनो संतो का पूजन किया गया था । धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा दोनो संतो के प्रयास से सत्संग सुंदर चलता है । श्री नरनारायणदेव युवक मंडल के सभी सदस्य पूरे धनुर्मास में अपने घरों से जो भी भोग के लिये लाते वह सभी में बांट दिया जाता था । महिला मंडलकी सेवा सराहनीय थी। (मोटा भगत वसंत त्रिवेदी)

कोलोनिया मंदिर में हाटडी उत्सव

श्री स्वामिनारायण मंदरि कोलोनिया में ३० वी नम्बर को सायंकाल ५ से ८ बजे तक स्वा. धर्मकिशोरदास तथा स्वा. नरनारायणदास की उप्सथिति में तथा यहाँ के हरिभक्तों की उपस्थिति में सभी मिलकर हाटकी उत्सव किये थे । सर्वप्रथम धुन तथा कीर्तन किया गया । महंत स्वामीने कथा में हाटडी उत्सव का महत्व बाताया । अन्त में हाटडी दर्शन में शाकभाजी का प्रसाद दिया गया था।

धनुर्मास धुन ता. १६ डिसम्बर से १४ जनवरी तक प्रतिदिन प्रात: काल श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धुन संत-हरिभक्त समूह में करते थे । शास्त्री स्वामीने श्रीहरिगीता की कथा सुनाई थी । महापूजा का भी आयोजन किया गया था । अंत में जनमगंल का समूह पाठ करके सभी प्रसाद ग्रहण किये थे।

यजमान परिवार का पुष्पहार से सन्मान किया गया था । धर्मकुल के आशीर्वाद से सत्संग प्रवृत्ति अच्छी चलती है।

(प्रवीणभाई शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर ह्युस्टन में उत्तरायण को झोली पर्व

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के ह्युस्टन मंदिर में १३ जनवरी रविवार को महंत स्वामी दिव्यप्रकाशदासजी

तथा पुजारी घनश्याम स्वामी की उपस्थिति में उत्तरायण को झोली पर्व की विधिसम्पन्न की गयी थी । सर्व प्रथम हरिभक्तों द्वारा धुन भजन-कीर्तन किया गया था । ठाकुरजी के सिंहासन को अच्छी तरह सजाया गया था । संतोने पतंग से अलंकृत किया था । उत्तरायण पर्व का महत्व समझाया गया था । जनमगंल पाठ करके आरती करके प्रसाद ग्रहण करके सभी अपने घर को प्रस्थान किये थे । धर्मकुल की कृपा से सत्संग प्रवृति अच्छी चलती है ।

(प्रवीण शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर टोरन्टो केन्नेडा में शाकोत्सव सम्पन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से टोरन्टो के श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. १९-१-१४ को शाकोत्सव मनाया गया था । इस प्रसंग पर सभा में महाराज के समकालीन दृश्य दिखाये गये थे । सभा का प्रारंभ कीर्तन भजन से हुआ था । शाक का वघार भक्ति स्वामी तथा भक्तों ने मिलकर किया था । महंत स्वामीने शाकोत्सव का हार्द समझाया था । युवानों का विशेष सन्मान किया गया था । ४०० से भी अधिक हरिभक्त शाकोत्सव में आये ते । समग्र प्रसंग का संचालन दशरथभाई चौधरी (प्रेसीडेन्ट केनेडा) ने किया था । श्री नरनारायणदेव युवक मंडल ने समग्र उत्सव का आयोजन किया था । महिला मंडल ने रोटी बनाने की सेवा की थी ।

(रसिकभाई पटेल, सेक्रेटरी आई.एस.एस.ओ. केनेडा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर लेस्टर (यु.के.)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से लेस्टर के श्री स्वामिनारायण मंदिर में महामंत्र की धुन की गयी थी । ता. १२-१-१४ को मकरसंक्रांति के दिन ४ घंटे की अखंड धुन रखी गयी थी, जिस में प.भ. दशरथभाई परमार परिवारने यजमान पद का लाभ लिया था । वहाँ जितने हरिभक्त बने थे वे अमदावाद मंदिर धनुर्मास मासिक धुन के भी ४३ हरिभक्त यजमान बने थे ।

(किरण भावसार)

अक्षरनिवासी हरिभक्तों को भावभीनी श्रद्धांजली

गांधीनगर : प.भ. सुरेशभाई कांतिलाल की माताजी रईबहन ता. २९-१२-१३ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अभरनिवासिनी हुई है ।

लूईसदन (अमेरिका) : प.भ. नारायण तथा रुपेश के पिताजी प.भ. लक्ष्मीप्रसाद हरिप्रसाद जोशी (उम्र. ८४ वर्ष) ता. १७-१-१४ को श्रीहरि का अखंड स्मररण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है ।

धांगधां : प.भ. सोनी सतीषभाई के पिताजी प.भ. आडेसरा नानुभाई ता. ३-१२-१३ को श्रीहरि का अखंड स्मररण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है ।

हरिपर (धांगधा) : प.भ. प्रेमजीभाई की माताजी उजीबहन ता. ९-१-१४ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई है ।

हरिपर (धांगधा) : प.भ. घनश्यामभाई प्रभुभाई पटेल ता. १२-१२-१३ को श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुई अक्षरनिवासी हुऐ है ।

गोधावी : प.भ. पथुभा जसुभा वाधेला ता. २१-११-१३ को श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुई अक्षरनिवासी हुऐ है ।

मेघपर (कच्छ) : प.भ. धनजीभाई हालाई के (वर्तमान में पर्थ ओस्ट्रेलीया) पिताजी प.भ. नानजी रवजी हालाई (उम्र ८२ वर्ष) ता. १-१-१४ को श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुई अक्षरनिवासी हुऐ है ।

अमदावाद (नारणपुरा) : प.भ. विठ्ठलदास बेचरदास ता. १३-१-१४ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुई अक्षरनिवासी हुऐ है

वहेलाल : प.भ. परसोत्तमभाई शीवाभाई पटेल ता. १२-१-१४ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुई अक्षरनिवासी हुऐ है ।

अमदावाद (जीवराजपार्क) : प.भ. शांतिबाई खेतसीभाई सोनी ता. ६-१-१४ को (प.भ. जयंतीभाई के. सोनी (लेकक) के बडे भाई) श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुई अक्षरनिवासी हुऐ है ।

रायंसगपर (ता. हलवद-मूली देश) : मूली श्री राधाकृष्णदेव के निष्ठावान भक्त प.भ. सवजीभाई नथुभाई मोरी ता. ११-१-१४ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं ।

अमदावाद (उवारसदवाला) : प.भ. पुष्पाबहन (प्रफुल्लाबहन) शरदचंन्द्र पटेल ता. २४-१-१४ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई है ।

लवारपुर (जि. गांधीनगर) : प.भ. किरीटभाई रजनीभाई तथा जनकभाई की माताजी पटेल कंकुबहन गोकलदास ता. १०-१-१४ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई है ।

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित ।

(१) भाटेरा नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा करते एवं सभा में आशीर्वाद देते प.पू. आचार्य महाराजश्री (२) माणेकपुर में कथा पारायण प्रसंग सभा में दर्शन देते प.पू. महाराजश्री एवं प.पू. लालजी महाराजश्री (३) महादेवनगर मंदिर में शाकोत्सव करते प.पू. महाराजश्री साथ में महंत स्वामी (४) महेसाणा मंदिर में शाकोत्सव दर्शन (५) उवारसद मंदिर में पाटोत्सव प्रसंग ठाकोरजी का अभिषेक करते हुए प.पू. महाराजश्री (६) माधवगढ मंदिर में प.पू. लालजी महाराजश्री की आरती उतारते हुए यजमान परिवार (७) मोटेरा गाँव में कथा पारायण प्रसंग में सभा में आशीर्वाद देते हुए प.पू. महाराजश्री (८) आमजा गाँव में कथा पारायण प्रसंग में सभा में दर्शन देते हुए प.पू. महाराजश्री ।

Registered under RNI NO.-GUJHIN/2007/20220 “Permitted to post at Ahd PSO on 11th every month under postal Regd. No.GUJ.581/12-14 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2014

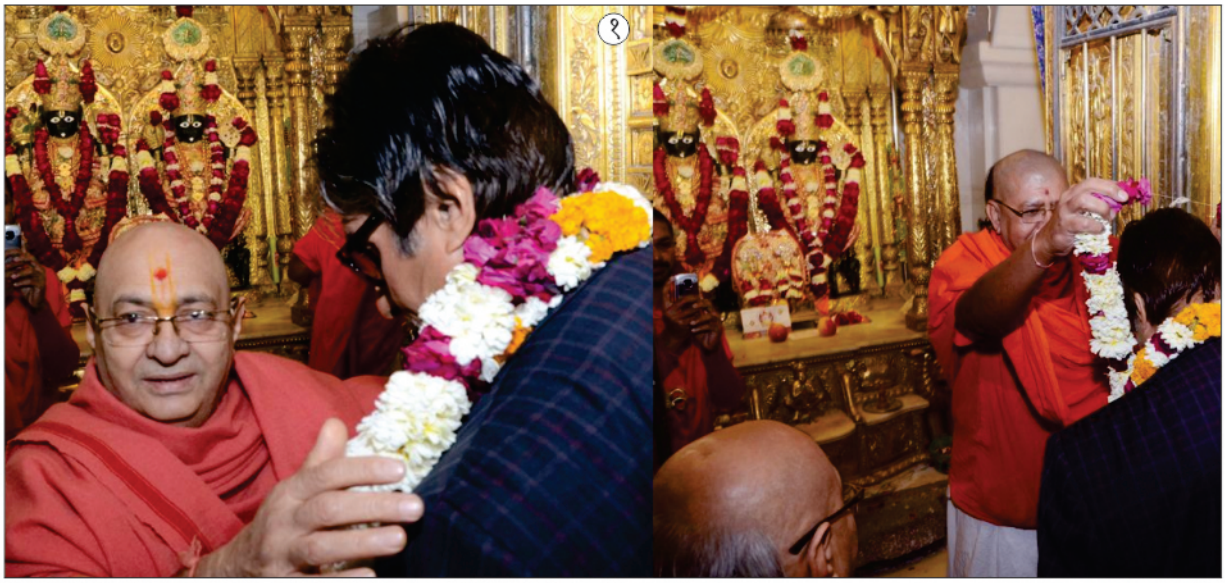

Jagadish Offset

Praful Kharsani

(१) सदी के महानायक अमिताभ बच्चन महा प्रतापी देव श्री नरनारायणदेव के दर्शन हेतु पधारे तब महंत स्वामी एवं पू. ब्रह्मचारी स्वामी राजेश्वरानंदजी फूलहार से स्वागत करते हुए (२) अमदावाद मंदिर में वसंत पंचमी को श्री शिक्षापत्री के पूजन करते हुए प.पू. बड़े महाराजश्री (३) टोरेन्टो केनेडा मंदिर में शाकोत्सव दर्शन (४) नारायणघाट मंदिर में शाकोत्सव करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री ।